RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
ज्येष्ठ-आषाढ़, विक्रम संवत् 2083 (जून-2026)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

पर्यावरण रक्षा
हमारी साझी जिम्मेदारी

- N.C.C., Scout & Guide
- Shooting Range
- Library
- First Aid & Medical Facilities
- Digital White Board & Smart Board
- Online Learning Platform
- Cultural Activity Hall & Auditorium
- Atal Tinkering Lab. for Robotics & innovation
- Well Equipped Laboratory
- National Rank in Sports Competition

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

H-107, Sector-12, NOIDA

E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com

Contact No. 0120-423817, 9910665195

Website: www.bdsvidyamandirnoida.com

Facebook: bdsvidyamandirnoida

YouTube: BDSVM

प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 06

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए जरूरी ये संयम - 09

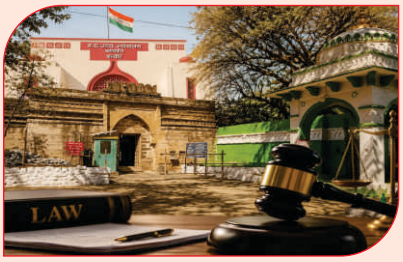

धार की भोजशाला मंदिर ही है - 15

राम की शरण में राजनीति का भविष्य-19

आधुनिकता का आकर्षण और बचपन का भटकाव -25

पर्यावरण और प्रगति चलें साथ-साथ.....05

जानलेवा बनता जा रहा बढ़ता तापमान 07

नवीकरणीय ऊर्जा की ओर भारत के कदम.....11

राष्ट्र सेविका समिति : सुसंस्कृत महिला शक्ति निर्माण की शिल्पशाला.....13

सभ्यतागत चेतना की प्रचंड वापसी.....17

पहनिए व्यवहार कुशलता के गहने.....21

तुलसीदास और रहीम की वैचारिक समानता.....23

कॉकरोच व्यंग्य : सत्ता, सोशल मीडिया और विपक्ष का स्वप्नलोक.....27

दहेज की आग में जलती बेटियां आखिर कब बदलेगा समाज?.....29

सादगी, समर्पण, प्रकृति के प्रति कृतज्ञ जून के पर्व उत्सव.....31

आत्मनिर्भर समाचार.....33

राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्र : 'भूगोल या इतिहास'?

भारत की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने के लिए न केवल बाहरी अपितु आंतरिक सुरक्षा का सुदृढ़ होना अनिवार्य है। वस्तुत: सीमावर्ती राज्यों में ऐसी सरकारों का होना आवश्यक है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ लेशमात्र भी समझौता न करें, भारत राष्ट्र की सुरक्षा नीतियों को अक्षरश: लागू करें और बाह्य हस्तक्षेप तथा राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों को विफल कर सकें।

भारत कोई राजनैतिक या भौगोलिक सीमाओं में समाहित हुआ धरती का टुकड़ा मात्र न होकर एक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना युक्त राष्ट्र है। हमारे लिए भारत 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' के अनुरूप एक पूजनीय इकाई है। विदेशी शक्तियां भारत की इसी चेतना को नष्ट-भ्रष्ट करने का कई शदियों से षड्यन्त्र करती रही हैं। वैश्विक मंच पर भारत का कद बढ़ने के साथ ही भारत विरोधियों की ईर्ष्या से प्रेरित षड्यन्त्र भी अनवरत जारी हैं। ये शक्तियां भारत को सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से खोखला करना चाहती हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे कुछ पड़ोसी इन भारत विरोधी शक्तियों के मुखोंटे बनकर भारत को महत्वहीन मुद्दों में फसाकर विकसित भारत के लक्ष्य से भटकाने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। हाल ही में देश ने ऑपरेशन सिंदूर की पहली सालगिरह मनाई। अवसर का उचित उपयोग करते हुए सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने 16 मई को सेना संवाद कार्यक्रम में पाकिस्तान को आतंकियों को पालने एवं प्रश्रय देने संबंधी चेतावनी देते हुए कहा कि पाकिस्तान को यह तय करना होगा कि वह भूगोल में रहना चाहता है या इतिहास में? इसमें नाम भले ही पाकिस्तान का लिया गया हो परंतु यह संदेश भारत के सभी शत्रुओं के लिए था।

भारत की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने के लिए न केवल बाहरी अपितु आंतरिक सुरक्षा का सुदृढ़ होना अनिवार्य है। वस्तुत: सीमावर्ती राज्यों में ऐसी सरकारों का होना आवश्यक है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ लेशमात्र भी समझौता न करें, भारत राष्ट्र की सुरक्षा नीतियों को अक्षरश: लागू करें और बाह्य हस्तक्षेप तथा राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों को विफल कर सकें। जम्मू-कश्मीर के बाद पश्चिम बंगाल तथा असम ऐसे राज्य हैं जहां विदेशी घुसपैठ से उत्पन्न असुरक्षा एक बड़ी चुनौती रही है। जम्मू-कश्मीर के केंद्र के अधीन होने, असम सरकार द्वारा सख्ती करने और अब पश्चिम बंगाल में नई सरकार सत्तारूढ़ होने से भारत का सुरक्षा परिस्थतिकी तंत्र निश्चित ही मजबूत होगा। भारत-बांग्लादेश सीमा पर लंबे समय से लंबित बाड़ लगाने और बुनियादी ढांचे के लिए पश्चिम बंगाल सरकार ने सीमा सुरक्षा बल को भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया तेज कर दी है। राज्य में अवैध घुसपैठियों की पहचान करने, उन्हें आधिकारिक दस्तावेजों से हटाने और उन्हें उनके देश वापिस भेजने के लिए 'डिटेक्ट, डिलीट एंड डिपोर्ट' व्यवस्था लागू की है। पश्चिम बंगाल सरकार का घुसपाठीयों की पहचान कर उन्हें हिरासत में रखने के लिए हर जिले में हिरासत केंद्र स्थापित किये जाने का निर्णय राष्ट्रीय सुरक्षा की लिहाज से मील का पत्थर साबित होगा। ज्ञात हो कि पश्चिम बंगाल भारत-बांग्लादेश सीमा का सबसे लंबा हिस्सा साझा करता है, जो 2216.7 किलोमीटर लंबा है। पिछले अनेकों वर्षों से यहां घुसपैठ, ड्रग तस्करी तथा अन्य गैरकानूनी कामों की शिकायतें रही हैं। भारत-बांग्लादेश सीमा का करीब 78 प्रतिशत यानी 1647 किलोमीटर हिस्सा बाड़ से ढका हुआ है, लेकिन अभी भी 569 किलोमीटर से ज्यादा हिस्सा बाकी है।

अमेरिका के विदेश मंत्री की भारत यात्रा और भारतीय प्रधानमंत्री की पाँच दिन की विदेश यात्रा भी भारत को और सुरक्षित बनाने की दिशा में मददगार होंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, स्वीडन, नॉर्वे और इटली की यात्राएं भी ऊर्जा और रक्षा सहयोग को मजबूत के उद्देश्य से थीं, जिनका सीधा असर तकनीकी उन्नयन के माध्यम से देश की रक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने पर होगा। (समस्त संदर्भ स्रोतों के प्रति कृतज्ञता)

■

पर्यावरण और प्रगति चलें साथ-साथ

कुमार सिद्धार्थ
लेखक एवं साहित्यकार

पिछले सात दशक में पर्यावरण को लेकर देश में जबर्दस्त जागरूकता बढ़ी है और पर्यावरण के हर आयाम पर नीतिगत रूप से काम करने की प्रक्रिया भी संचालित की गई है। जंगल बचाने से लेकर नदियों को साफ करने तक, प्रदूषण रोकने से लेकर जैव विविधता के संरक्षण तक अनेक योजनाएं बनाई गईं। लेकिन समग्र रूप से पर्यावरण का आकलन करें तो यही लगता है कि विकास की तेज दौड़ में प्रकृति ने सबसे ज्यादा कीमत चुकाई है। आजादी के बाद सड़कों, सिंचाई परियोजनाओं, बांधों, उद्योगों और शहरों के विस्तार ने देश को आधुनिक विकास की दिशा में जरूर आगे बढ़ाया, लेकिन इस विकास के लिए जल, जंगल और जमीन का जिस तरह इस्तेमाल हुआ, उसके दुष्परिणाम अब सामने आने लगे हैं।

आजादी के शुरुआती दशकों में विकास का अर्थ था-सड़कें, कारखाने, बड़े बांध और बिजली परियोजनाएं। इसके लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए। जंगलों की जगह सड़कें और बस्तियां बसती गईं। खनन, उद्योग और निर्माण कार्यों के लिए वनभूमि का लगातार हस्तांतरण होता रहा। जंगल केवल लकड़ी या वनोपज का स्रोत नहीं होते, वे वर्षा, मिट्टी, जल और जीवन का आधार होते हैं। लेकिन विकास की हमारी अवधारणा लंबे समय तक इन्हें संसाधन भर मानती रही। इसका नतीजा यह हुआ कि जंगलों का दायरा सिकुड़ता गया और पर्यावरणीय संतुलन कमजोर पड़ने लगा।

भारतीय वन सर्वेक्षण की रिपोर्टें बताती हैं कि देश में हरित आवरण बढ़ाने के प्रयास जरूर हुए हैं, लेकिन प्राकृतिक घने जंगलों की स्थिति चिंता का विषय बनी हुई है। देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के मुकाबले वन और हरित आवरण का अनुपात अभी भी उस लक्ष्य से कम है, जिसकी कल्पना राष्ट्रीय वन नीति में की गई थी। वर्ष 1988 की वन नीति में कहा गया था कि देश के एक तिहाई भू-भाग पर जंगल होने चाहिए और पर्वतीय क्षेत्रों में यह अनुपात दो तिहाई होना चाहिए। लेकिन आज भी हम इस लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए हैं। वृक्षारोपण के अभियान जरूर चलाए गए, पर यह भी गौर करने वाली बात है कि लगाए गए पेड़ों में कितने बचे और वे प्राकृतिक जंगलों की तरह जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन देने में कितने सक्षम हुए।

जंगलों की इस कटाई का असर केवल पेड़ों तक सीमित नहीं रहा। वर्षा चक्र प्रभावित हुआ, मिट्टी का कटाव बढ़ा, नदियों का स्वभाव बदला और जल संकट गहराने लगा। पहले गांवों में चौमासे के पानी को पूरे साल के लिए बचाकर रखने की कुआं, तालाब, बावड़ी और जल-संचयन की समृद्ध परंपरा थी। पानी स्थानीय स्तर पर जमीन में समाता था और भूजल का संतुलन बना रहता था। लेकिन आधुनिक विकास के साथ इन परंपरागत प्रणालियों की उपेक्षा शुरू हो गई। नहरों का जाल बिछाने के लिए नदियों को बांधा गया। बांधों के साथ बिजली उत्पादन का तर्क भी जोड़ा गया। फिर भी जब सिंचाई की कमी रह गई तो नलकूपों का सहारा लिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भूजल का अत्यधिक दोहन शुरू हो गया। आज देश के अनेक हिस्सों में भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है और पानी का संकट जीवन की बड़ी चुनौती बन चुका है।

पर्यावरण की इस गिरती स्थिति की आहट बहुत पहले सुनाई देने लगी थी। 1970 के दशक में उत्तराखंड के चमोली में चिपको आंदोलन शुरू हुआ। गांव के लोग अपने जंगलों को कटने से बचाना चाहते थे, क्योंकि उनकी आजीविका, उनका भविष्य और उनका जीवन उन्हीं जंगलों पर निर्भर था।

इसी तरह नर्मदा घाटी में बड़े बांधों के दुष्प्रभाव सामने आए तो वहां भी लोगों ने आवाज उठाई। केरल की शांत घाटी हो, पश्चिमी घाट के जंगल हों, बस्तर का आदिवासी क्षेत्र हो या समुद्रतटीय इलाके। देश के अलग-अलग हिस्सों में लोगों ने अपने-अपने स्तर पर प्रकृति बचाने की लड़ाई लड़ी। इन आंदोलनों ने देश को यह समझाया कि पर्यावरण केवल पेड़ों और नदियों का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह मनुष्य, समाज, संस्कृति और भविष्य का प्रश्न भी है।

सही बात है कि औद्योगिकीकरण और बड़े विकास मॉडल के जितने लाभ गिनाए गए थे, उतने वास्तव में नहीं दिखे। अनेक बड़ी घाटी परियोजनाओं के लिए हजारों परिवार उजाड़े गए, लेकिन उनके पुनर्वास की समस्याएं आज तक पूरी तरह नहीं सुलझीं। बड़ी परियोजनाओं ने क्षेत्रीय संस्कृति, जीवन-पद्धति और स्थानीय समाज को भी प्रभावित किया। यह भी सच है कि बड़े बांधों और भारी निर्माण कार्यों के पर्यावरणीय दुष्प्रभावों का आकलन हमेशा गंभीरता से नहीं किया गया। विकास की चमक में प्रकृति और मनुष्य के बीच के रिश्ते को अक्सर नजरअंदाज किया गया।

आज पर्यावरण संकट का सबसे बड़ा चेहरा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने है। मौसम का मिजाज तेजी से बदल रहा है। कहीं भीषण गर्मी पड़ रही है, कहीं अचानक बाढ़ आ रही है, कहीं लंबे सूखे की मार है तो कहीं चक्रवात और जंगल की आग जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में देश ने असामान्य तापमान, बेमौसम बारिश और प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता को करीब से देखा है। गर्मी के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं और शहरों से लेकर गांव तक इसका असर महसूस किया जा रहा है।

लेकिन हमें केवल ग्लोबल वार्मिंग ही नहीं, लोकल वार्मिंग को भी पहचानने की जरूरत है। हिमालय इसका बड़ा उदाहरण है। बदरीनाथ, केदारनाथ जैसे तीर्थ, हिमशिखर, हिमनदियां और बर्फीली चोटियां हमारे प्राकृतिक वैभव का हिस्सा हैं। पहले इन इलाकों में सीमित संख्या में लोग पहुंचते थे। वे परंपरागत साधनों और स्थानीय आवासों का उपयोग करते थे और लौट जाते थे। इससे वहां के पर्यावरण पर दबाव न्यूनतम रहता था। लेकिन सुविधाओं के विस्तार और पर्यटन के बढ़ते दबाव ने इन क्षेत्रों का स्वरूप बदल दिया है। आज लाखों यात्री हर साल इन

वर्ष 1988 की वन नीति में कहा गया था कि देश के एक तिहाई भू-भाग पर जंगल होने चाहिए और पर्वतीय क्षेत्रों में यह अनुपात दो तिहाई होना चाहिए। लेकिन आज भी हम इस लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए हैं। वृक्षारोपण के अभियान जरूर चलाए गए, पर यह भी गौर करने वाली बात है कि लगाए गए पेड़ों में कितने बचे और वे प्राकृतिक जंगलों की तरह जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन देने में कितने सक्षम हुए।

इलाकों में पहुंचते हैं। सड़कों, होटलों, पार्किंग, वाहनों और निर्माण गतिविधियों का असर वहां के सामान्य तापमान, हिमनदों और नदियों के परितंत्र पर पड़ रहा है। हिमालय की संवेदनशीलता को देखते हुए हाल के वर्षों में आई आपदाओं ने यह चेतावनी भी दी है कि प्रकृति की सीमाओं की अनदेखी भारी पड़ सकती है।

शहरों में भी पर्यावरण की स्थिति कम चिंताजनक नहीं है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, कचरे का संकट और बढ़ती गर्मी ने शहरी जीवन को कठिन बना दिया है। महानगरों में हरियाली घट रही है और सीमेंट-कंक्रीट का फैलाव बढ़ रहा है। वाहनों की संख्या तेजी से बढ़ी है, जिसके कारण हवा की गुणवत्ता खराब होती जा रही है। गर्मियों में शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से कई डिग्री ज्यादा दर्ज किया जा रहा है। यह भी लोकल वार्मिंग का ही एक रूप है।

हाल के वर्षों में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कुछ सकारात्मक पहलें भी हुई हैं। सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, कचरा प्रबंधन और पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को लेकर नई पहलें की जा रही हैं। लेकिन यह भी सच है कि केवल योजनाओं और कानूनों से पर्यावरण नहीं बचाया जा सकता, जब तक समाज की जीवनशैली और विकास की सोच में बदलाव न आए।

गांधी जी कहते थे कि प्रकृति हर एक की जरूरत तो पूरी कर सकती है, पर लालच नहीं। यह गूढ़ बात आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गई है। पिछले 75 साल में विकास की हमारी अवधारणा प्रकृति के अधिकतम दोहन पर केंद्रित रही है। अब समय आ गया है कि हम उन परंपरागत भारतीय व्यवस्थाओं को फिर से याद करें, जिनमें जल का संरक्षण था, जंगलों के प्रति सम्मान था और प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने की समझ थी।

हमें प्रकृति के सम्यक उपयोग की अवधारणा को फिर से बढ़ाना होगा। विकास जरूरी है, लेकिन ऐसा विकास जो पर्यावरण को नष्ट करके नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलन बनाकर आगे बढ़े। क्योंकि जल, जंगल और जमीन केवल आज की जरूरत नहीं, आने वाली पीढ़ियों की भी धरोहर हैं। यही समझ देश के पर्यावरण के सच्चे विकास का आधार बन सकती है। ■

जानलेवा बनता जा रहा बढ़ता तापमान

ज्ञानेन्द्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद्

बढ़ता तापमान अब जानलेवा बनता जा रहा है। देखा जाये तो मौजूदा दौर में देश हीटवेव की भीषण चपेट में है। असलियत में हीटवेव कहें, उष्ण लहर कहें या फिर लू कहें, की तीव्रता और घातकता में दिनोंदिन तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। दिन-ब-दिन बढ़ते तापमान और गर्म हवा के भीषण थपेड़ों ने दिन तो दिन रातों में भी जीना हराम कर दिया है। रातों में भी लू जैसे हालात से लोग चैन की नींद तक नहीं ले पा रहे हैं। मौसम विभाग भी कह रहा है कि अगले हफ्ते तक इस गर्मी से निजात मिल पाना संभव नहीं है। और तो और आने वाले दिनों में पारा 47-48 डिग्री को भी पार कर जायेगा, ऐसी आशंका है। जहां तक देश की राजधानी दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का सवाल है, वहां तापमान 45 डिग्री के ऊपर पहुंच गया है। वह तप रही है और आग की भट्टी बनकर रह गयी है। मौसम विभाग की मानें तो इस हफ्ते देश के उत्तर-पश्चिम, मध्य भारत और देश के कई हिस्सों यथा- पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, विदर्भ, मराठवाडा, मध्य महाराष्ट्र, बिहार और तेलंगाना के कुछ हिस्सों को भीषण लू का सामना करना पड़ेगा। यही नहीं तापमान में अगले दिनों में धीरे-धीरे दो से चार डिग्री तक की बढ़त हालात को और विषम बना देगी। उत्तर प्रदेश में बुंदेलखंड का बांदा जिला बीते दिनों सूरज के तीखे तेवरों का शिकार रहा और यहां के लोग 48 डिग्री सेल्सियस की गर्मी की तपिश में बेहाल झुलसते दिखे। फिर नौतपा के कहर जिसका असर 25 मई से 2 जून तक रहेगा और जिसमें तापमान 48 डिग्री सेल्सियस पहुंचने की चेतावनी दी गयी है, इस खतरे को और भयावह बना देगा।

इस बाबत हुए अध्ययनों से पता चलता है कि मौजूदा हीटवेव पहले की तुलना में चार डिग्री सेल्सियस ज्यादा गर्म हो चुकी है। 1950 के बाद से अबतक हीटवेव की भयावहता और उसके कारणों का विश्लेषण करने के बाद खुलासा हुआ है कि जो हीटवेव साल 1950 और साल 2000 के बीच चलती थी, उसमें और मौजूदा हीटवेव में काफी अंतर आ चुका है। इस निष्कर्ष तक पहुंचने में यूरोपीय मौसम विज्ञान एजेंसी कापरनिक्स का कहना है कि मौजूदा हीटवेव पहले की तुलना में चार डिग्री और ज्यादा गर्म हो चुकी है। इससे मानव स्वास्थ्य के लिए भीषण खतरा पैदा हो गया है। इसके लिए मानव जनित जलवायु परिवर्तन पूरी तरह जिम्मेदार है। गौरतलब है कि इसमें प्राकृतिक कारणों से उपजे जलवायु परिवर्तन की भूमिका लगभग नगण्य ही है। रिपोर्ट में भारत के संदर्भ में हीटवेव के साथ-साथ मौसम में भी कई बदलाव देखे जाने का उल्लेख है। इनमें सतह के वायु दबाव में बढ़ोतरी, हवाओं की गति

और तापमान के पैटर्न में हुए काफी बदलावों का उल्लेख है। रिपोर्ट की मानें तो इन बदलावों में नमी का बढ़ना, हवाओं की गति में यकायक कमी और सर्दी प्रमुख है। इसके अलावा पिछले 80 वर्षों में दुनिया के महानगरों में अत्याधिक गर्मी का अनुभव करने वाले दिनों की तादाद भी तीन गुणा हो गयी है। दरअसल 1940 के दशक में औसतन वैश्विक समुद्री सतह पर सालाना लगभग 15 दिन अत्याधिक गर्मी देखी जाती थी लेकिन वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण आज यह आंकड़ा बढ़कर 50 दिन प्रति वर्ष हो गया है। प्रोसीडिंग्स आफ द नेशनल एकेडेमी आफ साइंसेज नामक जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक अब समुद्री हीटवेव लम्बे समय तक सामान्य से काफी ऊपर रहती है। यह भी कि वैश्विक तापमान बढ़ोतरी के चलते अत्याधिक समुद्री गर्मी की घटनाएं लम्बे समय तक बनी रहती हैं।

असलियत में तापमान में बढ़ोतरी से घातक लू चलने की घटनाओं में बीते दशकों में तेजी से वृद्धि हुई है। बीते दो दशक तो लू से मरने वालों की तादाद में हुई बढ़ोतरी के जीते-जागते सबूत हैं। हर साल दुनिया में 1. 53 लाख से ज्यादा लोगों की मौत लू के कारण होती है। इसमें पांचवें हिस्से से अधिक मौतें भारत में होती हैं। भारत के बाद चीन और रूस में लू से जुड़ी मौतें सर्वाधिक हैं। यहां करीब 14 फीसदी मौतें हुयी हैं। वैज्ञानिकों के अध्ययन के अनुसार पिछले तीन दशक में हर साल कुल 1,53,078 लोगों की मौत लू से हुई है। यह भी कि हर साल गर्मियों में होने वाली कुल मौतों में से लगभग आधी एशिया से और 30 फीसदी से अधिक यूरोप में हुई हैं। फिर जलवायु परिवर्तन ने एशिया में हीटवेव की तीव्रता को काफी बढ़ाने में अहम भूमिका निबाही है। इससे अरबों लोग प्रभावित हुए हैं। इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता।

ज्यूरिख यूनिवर्सिटी के नये अध्ययन में यह खुलासा हुआ है कि दुनिया में यदि इसी प्रकार प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों की घटनाओं में और बढ़ोतरी हुयी तो उससे लू सम्बन्धी मामलों में मृत्यु दर बढ़ने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। गौरतलब है 2003 में यूरोप में 47.5 डिग्री सेल्सियस तापमान पहुंच गया था जिससे लू लगने के दौरान 45 हजार लोगों की मौत हो गयी थी। बीते 20 सालों में यह आंकड़ा करीब एक लाख तक पहुंच गया है। इसके अलावा 2013 से यूरोप, दक्षिण एशिया, लैटिन अमेरिका, अमेरिका, कनाडा सहित दुनिया के 47 देशों के 748 शहरों में गर्मी से सम्बन्धित मृत्यु दर सम्बन्धी आंकड़े के अध्ययन में यह तथ्य सामने आया कि लू की

मौसम विभाग की मानें तो इस हफ्ते देश के उत्तर-पश्चिम, मध्य भारत और देश के कई हिस्सों यथा- पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, विदर्भ, मराठवाडा, मध्य महाराष्ट्र, बिहार और तेलंगाना के कुछ हिस्सों को भीषण लू का सामना करना पड़ेगा। यही नहीं तापमान में अगले दिनों में धीरे-धीरे दो से चार डिग्री तक की बढ़त हालात को और विषम बना देगी।

घटनाओं में कहीं भी कमी नहीं आयी है और वहां लू से मरने वालों की तादाद में बढ़ोतरी हुई है। साथ ही वैज्ञानिकों ने कार्बन डाई आक्साइड में हुई रिकार्ड बढ़त और तापमान में लगातार होती बढ़ोतरी के चलते हीटवेव की भयावहता की आशंका व्यक्त की है।

दरअसल हीटवेव की जद में देश की 80 फीसदी आबादी और 90 फीसदी क्षेत्रफल आने की आशंका व्यक्त की गयी है। विशेषज्ञों की मानें तो हीटवेव की स्थिति मानव शरीर के लिए अत्याधिक खतरनाक होती है। इससे डिहाईड्रेशन, हीटस्ट्रोक और मौत भी हो सकती है। इसकी चपेट में बच्चे, 80 से ज्यादा उम्र वाले बुजुर्ग, विशेष रूप से महिलाएं, फेफड़ों की पुरानी बीमारी वाले, निर्माण और श्रम से जुड़े लोग ज्यादा आते हैं। इन पर हीटवेव का जोखिम ज्यादा रहता है। फिर पहले से ही स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोगों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। इसमें दो राय नहीं है कि बीते बरसों में हर महाद्वीप को हीटवेव ने प्रभावित किया है। इससे जंगलों में आग की घटनाओं में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई। साल 1992 से लेकर अभी तक लू के चलते तकरीब 24 हजार लोगों की मौतें हुयी हैं। आने वाले सालों में 60 करोड़ लोग इससे सर्वाधिक प्रभावित होंगे। इससे 31 से 48 करोड़ लोगों के जीवन की गुणवत्ता में कमी दर्ज की जायेगी। विश्व मौसम विज्ञान संगठन डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट की मानें तो 2027 तक पूरी दुनिया में रिकार्ड तोड़ गर्मी की आशंका है। चिंता की बात यह है कि यदि तापमान वृद्धि की दर पर अंकुश नहीं लगा तो सदी के अंत तक गर्मी से 1.5 करोड़ लोग मौत के मुहाने तक पहुंच जायेंगे।

कोलंबिया यूनीवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने कहा है कि जीवाश्म ईंधन कंपनियों द्वारा तेल और गैस का उत्सर्जन स्तर यदि 2050 तक यही रहा तो 2100 तक गर्मी अपने घातक स्तर तक पहुंच जायेगी। उसका नतीजा लाखों लोगों की मौत होगा। यह भी कि प्रत्येक मिलियन टन कार्बन में बढ़ोतरी से दुनिया भर में 226 अतिरिक्त हीटवेव की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी। संयुक्त राष्ट्र की जलवायु समिति के अनुसार धरती के गर्म होने की रफ्तार अनुमान से कहीं ज्यादा है। अहम सवाल कार्बन उत्सर्जन कम करने का है, यदि ऐसा नहीं हुआ जिसकी संभावना अधिक है। उस दशा में सदी के आखिर तक धरती का तापमान बढ़कर चार डिग्री सेल्सियस पहुंच जायेगा। उस दशा में धरती रहने काबिल बची रह पायेगी? ■

अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए जरूरी ये संयम

डॉ. पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
वरिष्ठ पत्रकार एवं शिक्षाविद

जब से संघर्ष शुरू हुआ है, दुनिया में अफरा-तफरी मची हुई है। होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) के बंद होने से स्थिति और भी बिगड़ गई है, जिससे सप्लाई चेन में दिक्कतें आ गई हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि पेट्रोलियम उत्पादों और जरूरी चीजों की सप्लाई कम हो गई है, जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। कई देशों में पेट्रोल, डीजल और खाद की कमी के कारण हालात खराब हो गए हैं, जिसका असर आम लोगों के साथ-साथ व्यापार और उद्योग पर भी पड़ रहा है। पेट्रोलियम उत्पादों और जरूरी चीजों की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं, जिससे आम लोगों और सरकार, दोनों पर दबाव बढ़ गया है। हालांकि, भारत सरकार इस संकट को विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कहीं बेहतर तरीके से संभाल रही है, फिर भी हमें भविष्य में ऐसी ही किसी तबाही से बचने के लिए विचार करना चाहिए और जरूरी कदम उठाने चाहिए।

क्यों विदेशी मुद्रा रिजर्व महत्वपूर्ण है? : किसी भी देश के लिए एक विदेशी मुद्रा रिजर्व आवश्यक है। यह देश को विभिन्न तरीकों से लाभान्वित करता है। यह देश की अंतरराष्ट्रीय व्यापार करने की क्षमता को दर्शाता है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार को अमरीकी डॉलर जैसी प्रमुख मुद्राओं के उपयोग की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, यह हमारे मामले में, रुपये, स्थानीय मुद्रा की स्थिरता में योगदान देता है। आरबीआई भारतीय रुपया के मूल्य पर नजर रखता है, और यदि यह गिरता है, तो यह मुद्रा स्थिर रखने के लिए कुछ डॉलर बेचता है। अंतर्राष्ट्रीय ऋण आम तौर पर अमेरिकी डॉलर या यूरो जैसी मुद्राओं में बने होते हैं, और एक ही मुद्रा में चुकाया जाना चाहिए। नतीजतन, विदेशी मुद्रा रिजर्व महत्वपूर्ण है, या अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां देश को डिफॉल्ट रूप से घोषित कर सकती हैं। यदि देश में आर्थिक उथल-पुथल है या दुनिया मंदी में है, तो विदेशी मुद्रा रिजर्व एक बफर के रूप में कार्य करता है, जिससे देश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखा जाता है।

सात ऐसे मुद्दे जिन पर प्रधानमंत्री मोदी ने संयम बरतने का आग्रह किया -

1. ईंधन की खपत कम करें : जब वैश्विक तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो भारत पर इसका असर तुरंत होता है। आयात बिल बढ़ जाते हैं, रिफाइनरी के मार्जिन कम हो जाते हैं, और मुद्रा कमजोर हो जाती है। वित्त वर्ष 2025-26 में कच्चे तेल का आयात बिल लगभग 137 अरब डॉलर तक पहुँच गया था; यह एक ऐसा आँकड़ा है जो सभी उद्योगों में महंगाई और लॉजिस्टिक्स की लागत को प्रभावित करता है। इस बात का विश्लेषण करें कि विदेशी मुद्रा भंडार पर कितना दबाव पड़ता है। ईंधन बचाने के लिए, हमें सार्वजनिक परिवहन जैसे मेट्रो, ट्रेन, बस, या कारपूलिंग का उपयोग करना चाहिए।

भारत जैसे विशाल राष्ट्र के लिए, ऊर्जा आपूर्ति की दीर्घकालिक रणनीति स्वदेशी संसाधनों पर आधारित होनी चाहिए और इसमें विभिन्न ऊर्जा स्रोतों के इष्टतम संतुलन का उपयोग आवश्यक है। बड़े पैमाने पर कोयले की खपत से जुड़ी पर्यावरणीय कठिनाइयों के अलावा, यह भी रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि कोयले के भंडार सीमित हैं। सौर ऊर्जा और अन्य गैर-पारंपरिक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनका उपयोग यथासंभव अधिकतम सीमा तक किया जाना चाहिए।

2. सोना : भारत दुनिया के लगभग किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक सोना खरीदता है। हर साल, देश 700 से 800 टन सोने का उपयोग करता है; इसकी मुख्य वजह घरों, शादियों, त्योहारों, निवेश के उद्देश्यों और ग्रामीण बचत से आने वाली भारी मांग है। हालांकि, घरेलू उत्पादन प्रति वर्ष केवल 1 से 2 टन तक सीमित होने के

कारण, भारत अपनी सोने की 90 प्रतिशत से अधिक आवश्यकताओं के लिए आयात पर ही निर्भर रहता है। वर्ष 2025 में, भारत ने लगभग 72 अरब डॉलर का सोना आयात किया, जिससे विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव पड़ा। क्या हम एक वर्ष के लिए सोने की खरीद टाल सकते हैं, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सुझाव दिया है?

3. **उर्वरक :** वर्ष 2025 में, हमने लगभग 15 अरब डॉलर मूल्य के उर्वरकों का आयात किया। इसका असर न सिर्फ विदेशी मुद्रा भंडार पर पड़ता है, बल्कि पर्यावरण और किसानों पर भी पड़ता है; इसलिए हमें भारतीय खेती की ओर लौटना चाहिए, जो आर्थिक रूप से जरूरी भी है और पर्यावरण तथा जीव-जंतुओं के लिए फायदेमंद भी।

4. **खाने का तेल :** 2025 में, हमने लगभग 19 अरब डॉलर का खाने का तेल आयात किया। प्रधानमंत्री ने इसमें 10 प्रतिशत की कटौती का आग्रह किया, जो स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होगा।

5. **विदेश यात्रा :** 2025 में, 3.27 करोड़ भारतीयों ने विदेश यात्रा की, जिस पर 15 से 16 अरब अमेरिकी डॉलर खर्च हुए। इससे विदेशी मुद्रा भंडार पर और दबाव पड़ा; इसके बजाय हमें अपने ही देश में यात्रा करनी चाहिए, जहाँ सुंदर पर्यटन स्थल, सांस्कृतिक विरासत स्थल और प्राकृतिक आकर्षण मौजूद हैं।

6. **घर से काम (Work from home) :** ईंधन की खपत कम करने का एक और तरीका है 'घर से काम' करने की उस प्रथा को फिर से शुरू करना, जिसे हमने कोरोना महामारी के दौरान अपनाया था। वर्चुअल मीटिंग और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधाएं पहले से ही मौजूद हैं। मुझे उम्मीद है कि उद्योग जगत प्रधानमंत्री के इस आग्रह को गंभीरता से लेगा।

7. **भारत के विकास के लिए आत्मनिर्भरता क्यों आवश्यक है? :** आइए इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझते हैं। लंबे समय तक मुगलों और फिर अंग्रेजों ने हमें आर्थिक और सामाजिक रूप से कुचला। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी हमें यह भ्रम बना रहा कि हम विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में चीन और अन्य धनी देशों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। हम धीरे-धीरे चीनी उत्पादों के आदी हो गए; अपने घर के आसपास ही देख लीजिए कि कितनी वस्तुएं चीन में बनी हैं; हमने मूर्तियां और पूजा सामग्री भी खरीदना शुरू कर दिया, जो एक प्रकार की मानसिक गुलामी और चीन पर निर्भरता थी, एक ऐसा देश जिसने हमेशा हमें धोखा दिया, हमारे शत्रु देश पाकिस्तान और उसके आतंकवादियों को हमारे नागरिकों और सैनिकों को मारने के प्रयासों में समर्थन दिया। चीन भारत में नक्सलवाद को बढ़ावा देता है। उसने वैश्विक स्तर पर कभी भारत का समर्थन नहीं किया। वे पूर्वोत्तर और कश्मीर के क्षेत्रों को कभी भारत का हिस्सा नहीं मानते। फिर भी, हमारी पिछली सरकारों द्वारा स्थापित नियमों और संस्थानों ने विनिर्माण या सेवा क्षेत्र शुरू करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन परिस्थितियां और मानसिक पीड़ा उत्पन्न की, जिससे हमारी अर्थव्यवस्था चीन की तुलना में काफी कमजोर रही। टाटा, अंबानी, अदानी, महिंद्रा और कई अन्य जैसे हमारे अग्रदूतों के दृढ़ संकल्प और लगन के कारण ही हम कठिन परिस्थितियों में भी अपनी क्षमताओं के प्रति भारतीयों में गर्व और विश्वास जगा पाए। स्थिति बदल रही हैं, और इन उत्पादों के स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा रहा है और 'मेक इन इंडिया' उत्पादों के साथ मजबूत भावनात्मक जुड़ाव के साथ इनका प्रचार किया जा रहा है। लोगों में देशभक्ति की भावना और भारतीयत्व के प्रति गर्व बढ़ा है, साथ ही चीन और पाकिस्तान जैसे शत्रु देशों के प्रति आक्रोश भी बढ़ा है। भारतीय निर्मित उत्पादों के खरीदार और विक्रेता के बीच संबंध जितना मजबूत होगा, अर्थव्यवस्था उतनी ही मजबूत होगी, जिसके परिणामस्वरूप अधिक रोजगार सृजित होंगे। इससे हम मूल रूप से शुद्ध निर्यातक बन जाएंगे। बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भारत आने वाले वर्षों में आर्थिक मोर्चे पर बड़ी भूमिका निभाएगा, साथ ही सभी के लाभ के लिए आध्यात्मिक और समग्र विकास उन्मुख दृष्टिकोण अपनाएगा और पर्यावरण को संतुलित और पोषित करेगा। वर्तमान सरकार की व्यापार-समर्थक नीतियां, साथ ही कुशल और जानकार कार्यबल, प्रत्येक क्षेत्र को मजबूत करेंगे और अर्थव्यवस्था को चीन से प्रतिस्पर्धा करने के लिए नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। साथ ही, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'वोकल फॉर लोकल' की घोषणा करते हुए 'आत्मनिर्भर भारत' कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विभिन्न उत्पादों के स्वदेशी विनिर्माण में सहायता करके हम अब भारत की आत्मनिर्भरता की सही राह पर अग्रसर हैं। केंद्र सरकार और कुछ राज्यों द्वारा उठाए गए उल्लेखनीय कदमों के कारण भारत में आत्मनिर्भरता की हमारी यात्रा फलदायी हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप निर्यात में वृद्धि, विनिर्माण और सेवा गतिविधियों का विस्तार हो रहा है।हमारे पास अभी भी आंतरिक रूप से एक बड़ा बाजार है और वैश्विक स्तर पर एक और भी बड़ा बाजार हमारा इंतजार कर रहा है। केंद्र सरकार की पहलों को सभी राज्यों, नौकरशाही, उद्यमों, उद्योगपतियों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और समग्र रूप से समाज के समर्थन की आवश्यकता है।

भारत, जो विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। एक ओर, आर्थिक विकास की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि लाखों लोग अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए विकास पर निर्भर हैं। दूसरी ओर, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसे पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करना भी अत्यंत आवश्यक है। भारत में पर्यावरणीय समस्याएं चिंताजनक गति से बढ़ रही हैं। ये पर्यावरणीय समस्याएं गंभीर और व्यापक हैं, जिनमें दम घोंटने वाले शहरी वायु प्रदूषण से लेकर व्यापक जल प्रदूषण और बढ़ते मृदा अपरदन तक शामिल हैं। ये चुनौतियां न केवल लाखों भारतीयों के स्वास्थ्य और आजीविका को खतरे में डालती हैं, बल्कि दीर्घकालिक विकास और आर्थिक विकास में भी बाधा डालती हैं। ■

नवीकरणीय ऊर्जा की ओर भारत के कदम

डॉ. शेखर सुमन
नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में पिछले एक माह से संघर्ष जारी है। इसके खत्म होने के अभी कोई आसार नहीं दिख रहे हैं, क्योंकि ईरान-इजराइल-अमेरिका यह सैन्य युद्ध अब आर्थिक युद्ध में बदल चुका है। ईरान ने समुद्री व्यापार मार्ग 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' को बंद कर दिया है जिससे विश्व को ज्यादातर पेट्रोल और पेट्रोलियम उत्पाद निर्यात किया जाता है। यह स्वाभाविक है कि इससे दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होती, लेकिन इसका प्रभाव दुनिया की उन अर्थव्यवस्थाओं पर ज्यादा हो रहा है जो केवल पारम्परिक ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भर है। भारत पर भी इस सैन्य और आर्थिक युद्ध का व्यापक प्रभाव देखने को मिल रहा है। लेकिन भारत पिछले एक दशक से हीं इस संभावित संकट से निपटने की तैयारी कर रहा था। भारत अब नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नेतृत्वकारी भूमिका में आ चुका हैं।

भारत ने 2025 में रिकॉर्ड 6.3 गीगावाट पवन टर्बाइन स्थापित किए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 85 प्रतिशत अधिक है। ब्लूमबर्गएनईएफ के अनुसार, इससे भारत अमेरिका और जर्मनी को पीछे छोड़कर 2025 में चीन के बाहर सबसे बड़ा पवन ऊर्जा बाजार बन गया।

ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में अनुसार, भारत में पवन ऊर्जा क्षमता में वृद्धि का एक प्रमुख कारण बहु-प्रौद्योगिकी आधारित जटिल स्वच्छ ऊर्जा नीलामी का उदय रहा है। इन नीलामियों में विकासकर्ताओं को दो या दो से अधिक नवीकरणीय प्रौद्योगिकियों - सौर, पवन और ऊर्जा भंडारण - को एकीकृत करना आवश्यक होता है, और अक्सर ये नीलामियां अधिक स्थिर और विश्वसनीय स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करने के लिए आकार में बड़ी होती हैं।

पवन ऊर्जा के बाद दूसरी सबसे सुरक्षित नवीकरणीय ऊर्जा- सौर ऊर्जा है। इस दिशा में चीन और भारत के उल्लेखनीय प्रगति को एक्स पर साझा करते हुए टेस्ला के संस्थापक एलन मस्क ने लिखा कि 'सौर ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा है।' साल 2025 में भारत ने चीन के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा सोलर प्लान लगाए।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, 31 मार्च, 2026 तक भारत की सौर ऊर्जा क्षमता 150 गीगावाट से अधिक हो गई है, जो नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वित्त वर्ष 2025-26 में देश ने रिकॉर्ड 44

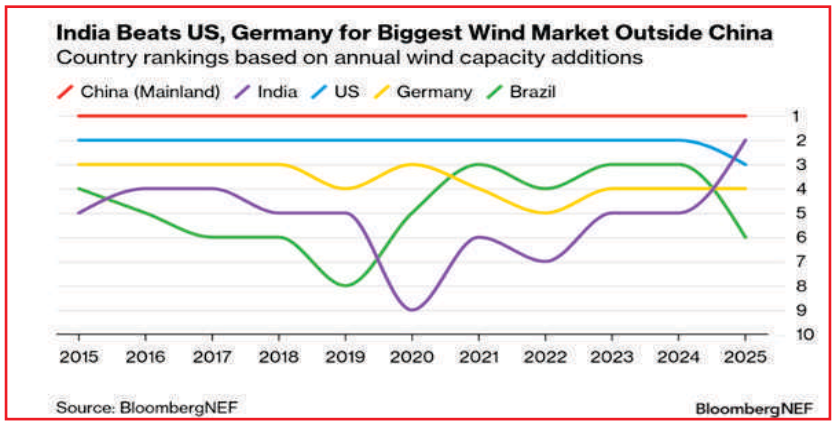

गीगावाट से अधिक नई सौर क्षमता जोड़ी, जिससे कुल क्षमता लगभग 150.26 गीगावाट तक पहुंच गई। बड़े पैमाने की परियोजनाओं और छतों पर सौर पैनल लगाने से प्रेरित इस तीव्र वृद्धि ने भारत को 2026 में विश्व के दूसरे सबसे बड़े सौर बाजार के रूप में स्थापित कर दिया है।

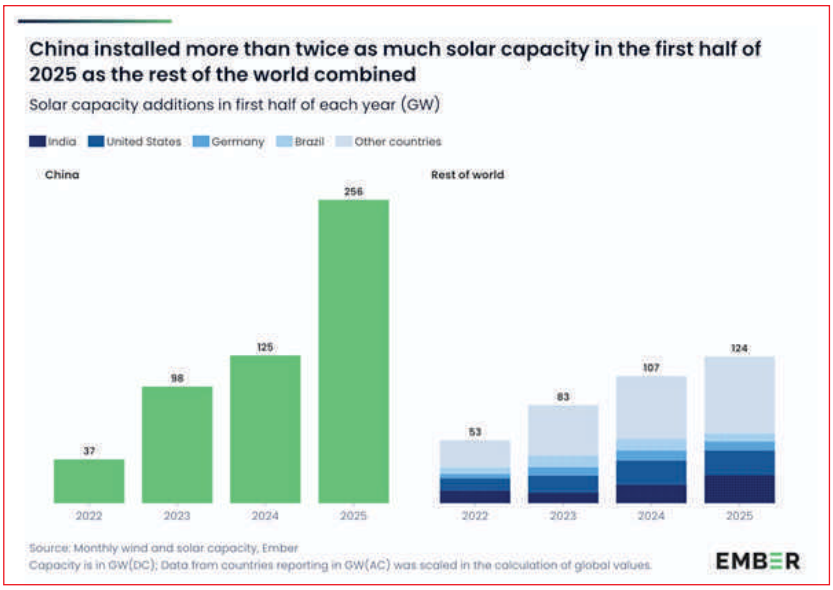

पश्चिम एशिया के इस संकट के बीच भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा के अन्य क्षेत्रों में भी प्रयास तेज कर दिए हैं। अप्रैल 2026 में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) ने अरुणाचल प्रदेश में दो बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं को मंजूरी दी, जिनमें कुल निवेश ₹40,000 करोड़ से अधिक है। कमला हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट-सुबनसिरी नदी पर 1,720 मेगावाट की परियोजना, जिसकी अनुमानित लागत ₹26,069.5 करोड़ है। कलई-II हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट - लोहित नदी पर 1,200 मेगावाट की परियोजना, जिसकी अनुमानित लागत ₹14,105.83 करोड़ है.

केंद्र सरकार ने 2026-27 से 2030-31 की अवधि के लिए ₹2,584.6 करोड़ की लघु जलविद्युत विकास योजना को मंजूरी दी है। इस योजना के तहत 1 मेगावाट से 25 मेगावाट क्षमता वाली लगभग 1,500 मेगावाट नई लघु जलविद्युत क्षमता जोड़ी जाएगी। इसका विशेष फोकस पहाड़ी और पूर्वोत्तर राज्यों पर रहेगा।

भारत ने वहां भी प्रयास तेज कर दिए हैं जहां अधिक रिसर्च की जरुरत होती है। पिछले साल हीं राष्ट्रीय भू-तापीय ऊर्जा नीति (2025) जारी की गयी। इसके तहत अनुसंधान, पायलट परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी विकास को समर्थन दिया जाएगा। इस नीति का लक्ष्य देशभर में चिन्हित 381 गर्म जलस्रोत स्थलों पर 10,600 मेगावाट की संभावित क्षमता का दोहन करना है।

सरकार उन क्षेत्रों में भी प्रयासरत है जहां आसानी से बड़ी मात्रा में नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। हम अपने कृषि, कृषि-औद्योगिक और वानिकी कार्यों से भारी मात्रा में बायोमास सामग्री उत्पन्न करते हैं। भारत प्रति वर्ष 500 मिलियन टन से अधिक कृषि एवं कृषि-औद्योगिक अवशेष उत्पन्न करता है जिससे बायोमास ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। इससे विद्युत उत्पादन की संभावित क्षमता 1,00,000 मेगावाट है। भारत में बायोमास ऊर्जा क्षमता 2023 में 10,232 मेगावाट से बढ़कर 2030 तक 14,970 मेगावाट होने का अनुमान है, जो 5.27 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) को दर्शाता है।

हमें यह समझने की जरूरत है कि ऊर्जा संकट के इस दौर में केवल सरकार के प्रयास हीं पर्याप्त नहीं है। जनता को इस नवीकरणीय परिवर्तन को स्वीकार करना होगा, अपनाना होगा और इस दिशा में अपने आसपास के लोगों को जागरूक भी करना होगा। यह वक्त धैर्य और आपसी सहयोग का है।

राष्ट्र सेविका समिति

सुसंस्कृत महिला शक्ति निर्माण की शिल्पशाला

मोनिका चौहान
स्वतंत्र टिप्पणीकार

राष्ट्र सेविका समिति भारत का एक प्रमुख महिला संगठन है, जिसकी स्थापना राष्ट्र जीवन में महिलाओं की सक्रिय, सशक्त और संस्कारित भूमिका सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई थी। समिति का मूल उद्देश्य महिलाओं में राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास, संगठन क्षमता, सेवा भाव और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना है। यह संगठन महिलाओं को केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण की एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में तैयार करता है।

समिति का विश्वास है कि यदि महिला सुसंस्कृत, जागरूक और आत्मबल से परिपूर्ण होगी, तो परिवार, समाज और राष्ट्र स्वतः सशक्त बनेंगे। इसी विचार को आधार बनाकर समिति सन 1936 से देशभर में शाखाओं, सेवा कार्यों, संस्कार वर्गों और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को संगठित और प्रशिक्षित कर रही है।

आज जब समाज अनेक प्रकार की सांस्कृतिक, वैचारिक और पारिवारिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब महिलाओं की भूमिका केवल परिवार तक सीमित नहीं रह गई है। वह समाज निर्माण, राष्ट्र चेतना और संस्कार संरक्षण की सबसे महत्वपूर्ण धुरी बन चुकी है। ऐसे समय में राष्ट्र सेविका समिति एक ऐसी शिल्पशाला के रूप में सामने आती है, जो केवल महिलाओं को संगठित ही नहीं करती, बल्कि उन्हें सुसंस्कृत, आत्मविश्वासी, राष्ट्रनिष्ठ और समाजहितैषी व्यक्तित्व के रूप में गढ़ती है।

समिति का कार्य केवल शाखाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय जीवन मूल्यों को व्यवहार में उतारने का एक सतत अभियान है। यहाँ महिलाओं को यह सिखाया जाता है कि शक्ति का अर्थ केवल बाहरी सामर्थ्य नहीं, बल्कि संयम, सेवा, संस्कार और संगठन क्षमता

भी है।

समिति की शाखाओं में शारीरिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। खेल, योग, गीत, प्रार्थना, चर्चा और सेवा कार्यों के माध्यम से उनमें नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और आत्मगौरव का विकास होता है। यहाँ आयु, वर्ग या आर्थिक स्थिति का कोई भेद नहीं होता है। हर महिला को राष्ट्रकार्य की सहभागी बनने का अवसर मिलता है।

समिति केवल व्यक्तित्व निर्माण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज के कठिन समय में सेवा का जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। जब देश कोविड महामारी जैसी अभूतपूर्व आपदा से जूझ रहा था, उस समय समिति की सेविकाएँ निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्यों में जुटी रहीं। अनेक स्थानों पर उन्होंने जरूरतमंद परिवारों तक भोजन पहुँचाने, मास्क निर्माण, दवाइयों की व्यवस्था और रोगियों की सहायता का कार्य किया। कई सेविकाएँ स्वयं के स्वास्थ्य की चिंता किए बिना अस्पतालों, क्वारंटीन केंद्रों और सेवा बस्तियों में निरंतर कार्य करती रहीं। इसी प्रकार बाढ़, भूकंप और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय भी समिति द्वारा राहत सामग्री, वस्त्र, भोजन और आवश्यक सहायता प्रभावित परिवारों तक पहुँचाई गई। महिलाओं और बच्चों को मानसिक संबल देने का कार्य भी सेविकाओं ने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ किया।

समिति की विशेषता यह भी है कि वह महिलाओं को केवल मंचीय भाषण तक सीमित नहीं रखती, बल्कि सेवा बस्तियों, शिक्षा, ग्राम विकास, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, पर्यावरण संरक्षण, आपदा सहायता और सामाजिक समरसता जैसे कार्यों से सीधे जोड़ती है। इससे उनमें संवेदनशीलता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

आज जब समाज अनेक प्रकार की सांस्कृतिक, वैचारिक और पारिवारिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब महिलाओं की भूमिका केवल परिवार तक सीमित नहीं रह गई है। वह समाज निर्माण, राष्ट्र चेतना और संस्कार संरक्षण की सबसे महत्वपूर्ण धुरी बन चुकी है। ऐसे समय में राष्ट्र सेविका समिति एक ऐसी शिल्पशाला के रूप में सामने आती है, जो केवल महिलाओं को संगठित ही नहीं करती, बल्कि उन्हें सुसंस्कृत, आत्मविश्वासी, राष्ट्रनिष्ठ और समाजहितैषी व्यक्तित्व के रूप में गढ़ती है।

आज पाश्चात्य प्रभाव और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण परिवारों में संवाद कम हो रहा है, संस्कार कमजोर पड़ रहे हैं और युवा पीढ़ी दिशाहीनता की ओर बढ़ रही है। ऐसे वातावरण में समिति महिलाओं को केवल 'अधिकार' नहीं, बल्कि 'कर्तव्य' का भी बोध कराती है। वह बताती है कि एक संस्कारित महिला ही संस्कारित परिवार और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।

भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब-जब राष्ट्र संकट में आया, तब-तब महिलाओं ने आगे बढ़कर समाज को दिशा दी। चाहे वह माता जीजाबाई हों, रानी लक्ष्मीबाई हों या अहिल्याबाई होलकर इन सभी ने संस्कार और शक्ति का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत किया। राष्ट्र सेविका समिति उसी परंपरा को आधुनिक युग में आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है।

समिति महिलाओं में यह भावना जागृत करती है कि वे स्वयं को कभी कमजोर न समझें। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति स्वरूपा माना गया है। आवश्यकता केवल उस शक्ति को पहचानने, जागृत करने और राष्ट्रहित में उपयोग करने की है।

आज समाज को ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है जो आधुनिकता और संस्कृति के बीच संतुलन बना सकें, परिवार को जोड़ सकें, समाज को दिशा दे सकें और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझ सकें। राष्ट्र सेविका समिति इसी उद्देश्य को लेकर वर्षों से निरंतर कार्य कर रही है।

वास्तव में, यह केवल एक संगठन नहीं, बल्कि सुसंस्कृत महिला शक्ति निर्माण की ऐसी शिल्पशाला है जहाँ से निकलने वाली प्रत्येक सेविका समाज और राष्ट्र जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की वाहक बनती है। ■

धार की भोजशाला मंदिर ही है

शिवानी चतुर्वेदी
लेखिका

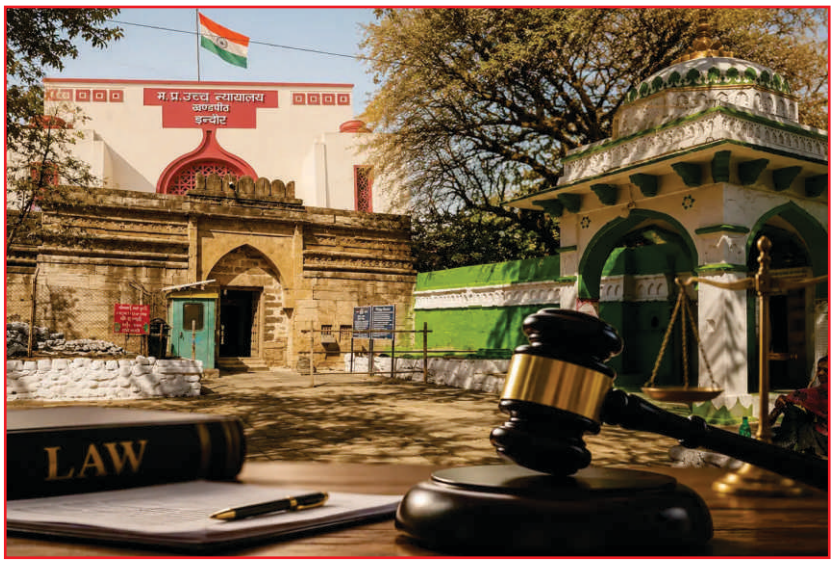

मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक नगर धार (प्राचीन नाम धारा) में स्थित भोजशाला भारतीय इतिहास, संस्कृति और शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। भोजशाला का निर्माण परमार वंश के शासक राजा भोज ने 1034 ईस्वी में करवाया था। राजा भोज केवल एक पराक्रमी शासक ही नहीं, बल्कि विद्वान, साहित्यकार और कला-संरक्षक भी थे। उन्होंने अपने राज्य में संस्कृत भाषा तथा अन्य विषयों की शिक्षा हेतु अनेकों संस्थानों का निर्माण कराया था जिसमें से भोजशाला प्रमुख है। इस संस्थान के भीतर वाग्देवी का एक मंदिर भी था। यहां वेद, व्याकरण, साहित्य और दर्शन का अध्ययन कराया जाता था।

1305 ईस्वी में इस क्षेत्र पर अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण हुआ। इस आक्रमण के समय खिलजी ने भोजशाला सहित मालवा क्षेत्र के कई मंदिरों को भारी क्षति पहुंचाई। 1569 ईस्वी में महमूद शाह खिलजी द्वितीय ने मंदिर परिसर के पास चिश्ती संत कमाल मौला की दरगाह बनवा दी। कहा जाता है कि चिश्ती कमाल मौला 1205 के आस पास यहां आकर बस गए थे।

यही कारण है कि यह परिसर कमाल मौला मस्जिद के नाम से जाना जाने लगा।

1857 में हुए उत्खनन में यहां वाग्देवी की प्रतिमा मिली। जिसे अंग्रेज अधिकारी लन्दन ले गए। आज यह प्रतिमा लन्दन के संग्रहालय में है। भोजशाला लंबे समय से दो समुदायों के बीच धार्मिक अधिकारों को लेकर चर्चा और विवाद का विषय रही है। सनातन आस्था के अनुसार यह माँ सरस्वती का प्राचीन मंदिर है, जबकि मुस्लिम समुदाय इसे मस्जिद के रूप में देखता है।

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण ने 2003 में अलग-अलग दिनों में दोनों समुदायों को पूजा और नमाज की अनुमति दी थी। सनातन धर्म के लोग मंगलवार के दिन मां वाग्देवी की पूजा करते थे और मुस्लिम समुदाय के लोग यहां शुक्रवार को नमाज अदा करते थे। बसंत पंचमी के अवसर पर यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते हैं और माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना करते हैं।

साल 2022 में हिन्दू फ्रंट फॉर जस्टिस द्वारा मध्यप्रदेश हाइकोर्ट में एक याचिका दायर की गई। याचिका में मांग की गई कि भोजशाला का वास्तविक धार्मिक स्वरूप निर्धारित किया जाए, सनातनियों को संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत पूर्ण पूजा का अधिकार प्रदान किया जाए और साथ ही दूसरे समुदाय की गतिविधियों पर रोक लगाई जाए। याचिका में यह भी मांग की गई कि इस परिसर का प्रबंधन केंद्र सरकार या किसी ट्रस्ट को सौंपा जाए। ब्रिटिश म्यूजियम में रखी मां वाग्देवी की प्रतिमा को वापस लाकर भोजशाला में स्थापित किया जाए और उसकी निरंतर पूजा सुनिश्चित की जाए। मामले की सुनवाई के दौरान 11 मार्च 2024 को हाई कोर्ट ने ASI को भोजशाला परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने का आदेश दिया। लगभग 98 दिनों तक चले इस सर्वेक्षण के बाद 15 जुलाई 2024 को ASI ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की।

भोजशाला में ASI की ओर से किए गए उत्खनन एवं वैज्ञानिक अन्वेषण का कार्य प्रोफेसर श्री आलोक त्रिपाठी जी की अध्यक्षता में संचालित किया गया। प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी जी भारत के प्रसिद्ध पुरातत्वविद् हैं और वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर कार्यरत हैं। प्रस्तुत है इस विषय पर उनसे हुई दूरभाषिय

वार्ता के प्रमुख अंश -

प्रोफेसर त्रिपाठी ने बताया कि मध्यप्रदेश हाइकोर्ट की इंदौर पीठ ने एएसआई को एक विशेषज्ञ समिति गठित करने का निर्देश दिया था। न्यायालय ने स्पष्ट रूप से यह निर्धारित किया कि वरिष्ठ अधिकारियों की यह समिति किन-किन बिंदुओं पर कार्य करेगी तथा किस क्षेत्र में अध्ययन और जांच की जाएगी।

न्यायालय ने यह भी कहा कि विवादित संरक्षित स्मारक भोजशाला - कमाल मौला मस्जिद परिसर के भीतर तथा उसके चारों ओर पचास मीटर के क्षेत्र में वैज्ञानिक अन्वेषण (Scientific Exploration), जीपीआर सर्वे (Ground Penetrating Radar Survey) और पुरातात्विक उत्खनन कर विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाए तथा उसे साक्ष्यों सहित न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

माननीय न्यायालय के आदेशानुसार ASI ने प्रोफेसर त्रिपाठी की अध्यक्षता में सात वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति गठित की। जिस में दोनों पक्षों के अधिकारियों को सम्मिलित किया गया। मार्च से जुलाई तक लगभग 98 दिनों तक इस टीम ने वहां विस्तृत जांच और अध्ययन कार्य किया। इसमें जीपीआर सर्वे तथा सामान्य सतही सर्वेक्षण (General Surface Survey) शामिल था। जीपीआर सर्वे के लिए National Geophysical Research Institute तथा Council of Scientific and Industrial Research जैसे संस्थानों के विशेषज्ञों की सहायता ली गई।

इसके पश्चात स्मारक के भीतर और बाहर पुरातात्विक उत्खनन किया गया। प्रोफेसर त्रिपाठी जी ने बताया कि माननीय उच्चतम न्यायालय का स्पष्ट निर्देश था कि उत्खनन के दौरान संरचना के मूल स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो। इस कारण अत्यंत सावधानी और वैज्ञानिक पद्धति से कार्य किया गया, ताकि राष्ट्रीय महत्व के इस संरक्षित स्मारक को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचे।

उत्खनन के दौरान वहां तीन विभिन्न स्तरों पर संरचनाओं के अवशेष प्राप्त हुए। सबसे प्राचीन संरचना ईंटों से निर्मित थी, जिसे लगभग दसवीं शताब्दी का माना गया। इसके ऊपर लगभग तेरहवीं शताब्दी की एक विशाल संरचना के अवशेष मिले, जो बेसाल्ट पत्थरों से निर्मित थी। इस संरचना का ऊपरी भाग नष्ट हो चुका है, किंतु प्लेटफॉर्म तक का भाग आज भी सुरक्षित है। वर्तमान ढांचा इसी प्लेटफॉर्म के ऊपर निर्मित है। इस प्रकार तीन अलग-अलग स्तरों पर स्पष्ट रूप से भिन्न संरचनाएं प्राप्त हुईं, जिनकी निर्माण सामग्री, काल और स्वरूप एक-दूसरे से अलग हैं। प्रोफेसर त्रिपाठी जी के अनुसार पुरातत्वविदों ने प्राप्त मूर्तियों, स्थापत्य अवशेषों और अन्य सामग्रियों के आधार पर पालियोग्राफी (लिपि-विज्ञान) तथा अन्य वैज्ञानिक विधियों से उनकी तिथि निर्धारित की।

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण ने 2003 में अलग-अलग दिनों में दोनों समुदायों को पूजा और नमाज की अनुमति दी थी। सनातन धर्म के लोग मंगलवार के दिन मां वाग्देवी की पूजा करते थे और मुस्लिम समुदाय के लोग यहां शुक्रवार को नमाज अदा करते थे। बसंत पंचमी के अवसर पर यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते हैं और माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना करते हैं।

उत्खनन के दौरान अनेक अभिलेख, उनके खंड, विभिन्न कालों के सिक्के तथा मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए। ये सिक्के ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर आधुनिक काल तक के बताए गए हैं। गर्भगृह के फर्श के नीचे से भी मूर्तियां और अभिलेख प्राप्त हुए। न्यायालय के निर्देशानुसार प्रत्येक वस्तु का अत्यंत विस्तृत रूप से दस्तावेजीकरण किया गया। जैसे कौन सी वस्तु कहां से मिली, कब मिली, उसका स्वरूप क्या है तथा उसकी अनुमानित तिथि क्या है?

इन सभी बिंदुओं का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने लगभग 2190 पृष्ठों की, 10 खंडों में विभाजित विस्तृत रिपोर्ट न्यायालय में प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट में उत्खनन और सर्वेक्षण से संबंधित सभी विवरण, फोटोग्राफ, चित्र, अभिलेखों का लिपि-पठन तथा उनकी तिथि-निर्धारण संबंधी जानकारी सम्मिलित की गई। प्रोफेसर त्रिपाठी जी ने बताया कि स्मारक परिसर में अनेक "इंक इंस्क्रिप्शन" भी प्राप्त हुए, जो संस्कृत, प्राकृत तथा फारसी भाषा में है। जिन्हें समय-समय पर वहां आने वाले लोगों द्वारा लिखा गया होगा। अंत में उन्होंने कहा कि न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार निर्धारित समय-सीमा के भीतर ही रिपोर्ट न्यायालय को सौंप दी गई। अंत में उन्होंने कहा कि यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है कि न्यायालय ने प्रस्तुत साक्ष्यों और प्रमाणों को स्वीकार करते हुए अपना निर्णय दिया।

भोजशाला का प्रश्न केवल अतीत की धूल में दबे किसी स्मारक का प्रश्न नहीं है। यह भारत की सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक चेतना और प्रमाणाधारित इतिहास लेखन से जुड़ा हुआ विषय है। यह संघर्ष उस सांस्कृतिक आत्मविश्वास का प्रतीक है जो भारत को अपनी सभ्यतागत जड़ों से पुनः जोड़ना चाहता है।

साथ ही, प्रो. आलोक त्रिपाठी और उनके नेतृत्व में कार्यरत पुरातात्त्विक दल की भूमिका यह दर्शाती है कि इतिहास के विवादों का समाधान भावनाओं से अधिक प्रमाणों और वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर संभव है। भोजशाला आज केवल एक विवादित स्थल नहीं, बल्कि उस व्यापक संवाद का केंद्र है जहाँ इतिहास, आस्था और पुरातत्व तीनों एक-दूसरे से संवाद करते दिखाई देते हैं। ■

सभ्यतागत चेतना की प्रचंड वापसी

अभय श्रीवास्तव
एआई विशेषज्ञ एवं लेखक

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'-ऋग्वेद-'संपूर्ण संसार को श्रेष्ठ (आर्य) बनाते चलो'

भारत ने कभी विश्व को जीतने का स्वप्न नहीं देखा, भारत ने विश्व को दिशा देने का संकल्प लिया। यही वह अद्वितीय चेतना है जो इस राष्ट्र को केवल एक भूभाग नहीं, एक जीवित, साँस लेती सभ्यता बनाती है। हजारों वर्षों के उत्थान-पतन में भी, आक्रमणों और षड्यन्त्रों की आंधियों में भी, यह चेतना कभी विलुप्त नहीं हुई। क्योंकि यह मिट्टी में नहीं, मन में बसती है।

आज जब 'नया भारत' विश्व मंच पर ललाट उठाकर खड़ा है, तो उसके केन्द्र में केवल GDP या सैन्य सामर्थ्य नहीं, उसके मूल में वह सांस्कृतिक पुनर्जागरण धधक रहा है, जिसका प्रतीक है- भगवा। वेदों में अग्नि को ज्ञान, ऊर्जा और शुद्धि का आदिम प्रतीक माना गया है। भगवा उसी पावन अग्नि का वर्ण है, त्याग, तेजस्, तपस्या और अजेय राष्ट्रशक्ति का प्रतीक है। भगवा केवल रंग नहीं, यह भारत की आत्मा का घोषणापत्र है।

भगवा क्रान्ति : जब भारत ने करवट ली - 'हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा कोई साम्प्रदायिक विचार नहीं, यह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का दर्शन है।' -पू. श्री गुरुजी माधव सदाशिव गोलवलकर

2014 : यह वर्ष केवल एक चुनाव-परिणाम नहीं था। यह भारत के जनमानस का वह महाउद्घोष था जो दशकों की चुप्पी, उपेक्षा और सांस्कृतिक अपमान के पश्चात् फूट पड़ा। जिस भारतीयता को पिछड़ेपन का प्रतीक बताया गया था, उसे करोड़ों मतदाताओं ने गर्व से अपनी पहचान घोषित किया। भगवा क्रान्ति की यह पहली दहाड़ थी।

स्वतंत्रता के पश्चात् दशकों तक एक सुनियोजित बौद्धिक षड्यन्त्र चला। जिसमें मंदिर, वेद, संस्कृत और आयुर्वेद को 'पिछड़ेपन' से जोड़ा गया; भारतीय इतिहास को विकृत किया गया; और 'सेकुलरिज्म' के नाम पर हिन्दू समाज को अपनी ही पहचान से लज्जित कराया गया। किन्तु इतिहास की गहरी धारा को मोड़ा नहीं जा सकता। जब-जब दबाव बढ़ा, भारत और प्रबल होकर उठा।

भगवा क्रान्ति ने यह सिद्ध किया कि 'सॉफ्ट हिन्दुत्व' अब पर्याप्त नहीं। भारत अपनी सभ्यता, अपने देवालयों और अपने पूर्वजों के सम्मान की माँग करता है। यह माँग न वोट-बैंक की राजनीति से उठी, न किसी नेता के भाषण से यह भारत की मिट्टी से उठी।

भगवा क्रान्ति की यह लहर केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं रही। पश्चिम बंगाल जहाँ दशकों तक वामपंथ और तुष्टीकरण की राजनीति ने हिन्दू समाज को कुचला वहाँ 2021 में भाजपा का 77 सीटें जीतना और 38 प्रतिशत से अधिक वोट प्राप्त करना एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक उभार था। असम में 2021 व 2026 में लगातार भगवा की महाविजय यह सिद्ध करती है कि पूर्वोत्तर भारत जिसे कभी 'भाजपा-विरोधी क्षेत्र' माना जाता था आज भगवा चेतना का नया गढ़ बन चुका है।

भोजशाला से ज्ञानवापी तक : सत्य की पुनर्प्रतिष्ठा - भगवा क्रान्ति का दायरा मंदिरों से कहीं आगे है। मध्य प्रदेश के धार में स्थित भोजशाला जो माँ वाग्देवी (सरस्वती) का ऐतिहासिक विद्यापीठ है, राजा भोज की अमर सांस्कृतिक धरोहर। शताब्दियों तक आक्रान्ताओं के अतिक्रमण में जकड़ी रही। 2024 में ASI के सर्वेक्षण और न्यायिक प्रक्रिया के पश्चात् हिन्दू समाज को वहां पूजा-अर्चना का अधिकार प्राप्त हुआ। यह एक तीर्थ की मुक्ति नहीं, यह सनातन समाज की सांस्कृतिक चेतना की विजय थी।

ज्ञानवापी में शिवलिंग का प्रमाण, मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि का संघर्ष, सम्भल में हरिहर मन्दिर का उद्घाटन, कुतुब मीनार परिसर में मूर्तियों की पुनः स्थापना की माँग ये सब एक ही धारा के अंग हैं। भारत का जनमानस अब अपने इतिहास के साथ सत्य का सामना करने को तत्पर है। भगवा क्रान्ति केवल मंदिर-निर्माण नहीं यह इतिहास के विकृत पन्नों को पलटने का राष्ट्रीय संकल्प है।

करोड़ों लोग जो वर्षों तक मौन थे, वे आज भगवा को गर्व से उठाए चल रहे हैं।

तीर्थ-जागरण : भगवा क्रान्ति का सबसे बड़ा प्रमाण : भगवा क्रान्ति का सर्वाधिक मूर्त प्रमाण है सनातन तीर्थस्थलों पर उमड़ता अभूतपूर्व जनसैलाब। 2004 से 2013 के दशक में जहाँ प्रमुख तीर्थों की संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर मात्र 5 प्रतिशत थी, वहीं 2014 से 2026 के मध्य यह 25-40 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ी। यह आँकड़ा किसी प्रचार का नहीं, भारतीय जनमानस के आत्मबोध का है।

काशी विश्वनाथ धाम : 2013 में 70 लाख, 2025 में 7.2 करोड़, दस गुना वृद्धि। अयोध्या राम मंदिर : उद्घाटन के प्रथम वर्ष में 10 करोड़ दर्शनार्थी। यह संख्या फ्रांस

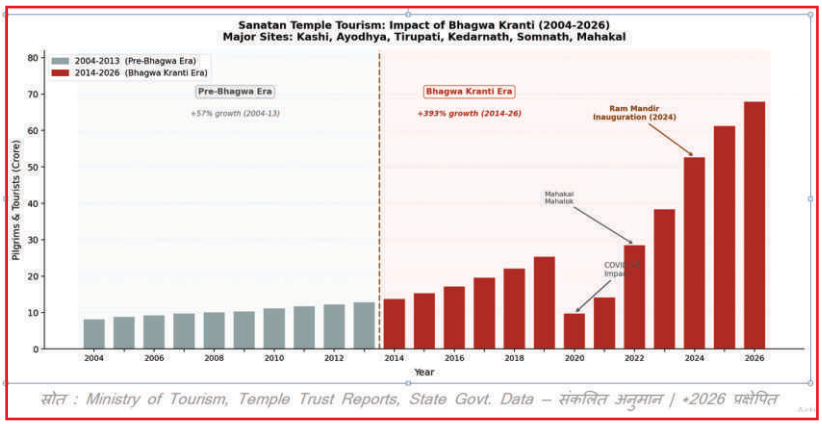

के सम्पूर्ण वार्षिक पर्यटन के बराबर है। महाकाल महालोक : 3 करोड़ वार्षिक, केदारनाथ : 18 लाख (2024-सर्वकालिक रिकॉर्ड), सोमनाथ : 1.2 करोड़। ये संख्याएं आस्था की नहीं, एक जागृत राष्ट्र की साक्षी हैं।

जो पीढ़ी कभी गोवा, पेरिस और बैंकाक में आधुनिकता खोजती थी, वही आज काशी की संकरी गलियों में, गंगा आरती की लौ में और महाकाल के त्रिशूल की छाँव में अपनी खोई पहचान पा रही है। 2025 में प्रयागराज महाकुम्भ में 66 करोड़ लोगों का अभूतपूर्व समागम - विश्व इतिहास में किसी भी धार्मिक आयोजन में आज तक इतनी भीड़ नहीं जुटी। यही भगवा क्रान्ति की वास्तविक शक्ति है।

अयोध्या और राम मंदिर : सभ्यता की विजय - 'रामो विग्रहवान् धर्मः - श्रीराम धर्म के साकार स्वरूप हैं।' -वाल्मीकि रामायण।

पांच शताब्दियों के सुदीर्घ संघर्ष, हजारों बलिदानों और अनगिनत न्यायिक लड़ाइयों के पश्चात् जनवरी 2024 में जब रामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए, तब पूरे भारत ने एक साथ सांस ली। वे अश्रु जो करोड़ों भारतीयों की आंखों से बहे। वे पराजय के नहीं थे, पांच सौ वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मिली सभ्यतागत विजय के अश्रु थे।

राम मंदिर केवल ईंट और पत्थर का निर्माण नहीं यह भारत की आत्मा का पुनर्जन्म है। अयोध्या की स्थानीय GDP में 35 प्रतिशत वृद्धि, 50,000 नए रोजगार, ₹85,000 करोड़ का विकास महाप्लान और आर्थिक उत्थान भी उतना ही सत्य है। 'रामराज्य' जिसे महात्मा गाँधी भी भारत की आदर्श शासन-व्यवस्था मानते थे वह अवधारणा पुनः भारतीय जनमानस में प्राण भर रही है।

संघ शताब्दी की साधना, राष्ट्र का जागरण -'संगठित और विजयी हिन्दू समाज ही विश्व में शान्ति और धर्म की स्थापना कर सकता है।' - डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 1925 में विजयादशमी के पावन दिन जो संकल्प लिया था - आज उसकी शताब्दी पर भारत उसकी फलश्रुति देख रहा है। 68,651 शाखाएं, 95 प्रतिशत जिलों में उपस्थिति, 25,000 विद्या मंदिर विद्यालय, 1 करोड़ से अधिक छात्र, COVID में 4 करोड़ लोगों को भोजन। यह केवल संगठन का विस्तार नहीं, यह भारत की सांस्कृतिक ऊर्जा का संगठित स्वरूप है।

संघ का मूल सिद्धांत रहा है : भारत की राष्ट्रीयता का आधार भौगोलिक सीमाएं नहीं, उसकी सनातन सांस्कृतिक चेतना है। इसीलिए संघ ने कभी सत्ता नहीं मांगी, समाज को माँगा। वनवासी सेवा, गोसेवा, पर्यावरण, शिक्षा, आपदा राहत। हर क्षेत्र में निःस्वार्थ सेवा। और आज उसी साधना का परिणाम है कि भगवा जनमानस का स्वतःस्फूर्त रंग बन गया है।

भविष्य का भारत : भगवा प्रकाश में - 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।'- स्वामी विवेकानन्द

आने वाला भारत केवल +10 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था नहीं होगा वह विश्व का सांस्कृतिक और वैचारिक नेतृत्व भी करेगा। 193 देशों में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, विश्वभर में 30 करोड़ योगाभ्यासी, G-20 में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष, चंद्रयान-3 की चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर विजय यह भारत की वैश्विक शक्ति के नए आयाम हैं।

भारत का जनमानस जाग रहा है - युवा स्वयं पढ़ रहे हैं, खोज रहे हैं। संस्कृत सीखने वालों में 300 प्रतिशत वृद्धि। YouTube पर वेद-पुराणों के 2 अरब मासिक दर्शन। IIT-IIM के छात्र वेदांत और ध्यान की ओर उन्मुख। भोज शाला, ज्ञानवापी, सम्भल। हर विजय नई चेतना जगाती है। यह भगवा क्रान्ति ऊपर से नहीं आई, यह भारत के करोड़ों हृदयों से स्वतः प्रस्फुटित हुई है।

जब-जब धर्म पर संकट आया शंकराचार्य उठे, रामानुजाचार्य उठे, विवेकानन्द उठे। आज एक पूरा राष्ट्र उठ रहा है। भगवा का यह उदय किसी के विरोध का प्रतीक नहीं, यह उस सभ्यता का आत्मबोध है जिसने मानवता को 'अहम् ब्रह्मास्मि' का दर्शन दिया, शून्य दिया, योग दिया और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का स्वप्न दिया।

भारत बदल नहीं रहा, भारत पुनः अपने भव्य, दिव्य और चिरन्तन स्वरूप में जाग रहा है। वन्दे मातरम् ।। भारत माता की जय ।। जय श्रीराम ■

राम की शरण में राजनीति का भविष्य

जय देव राठी
स्वतंत्र टिप्पणीकार

हाल के विधानसभा चुनावों ने भारतीय राजनीति में एक गहरी सांस्कृतिक और राजनीतिक हलचल को उजागर किया है। "जो राम का नहीं हुआ, उसकी लंका लगना तय है" वाली लोकप्रिय उक्ति इन परिणामों में प्रतीकात्मक रूप से साकार होती दिख रही है। असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और दिल्ली जैसे राज्यों में मतदाताओं ने स्पष्ट संकेत दिया है कि विभाजनकारी, नकारात्मक और सनातन संस्कृति पर प्रश्न उठाने वाली राजनीति अब स्वीकार्य नहीं रही। जो नेता या दल राम को प्रतीक मानकर राष्ट्रहित, सांस्कृतिक गौरव और समावेशी विकास की राह पर चले, वे सफल हुए, जबकि विरोध की राह चुनने वालों को करारी हार का सामना करना पड़ा। असम में हेमंत बिस्वा शर्मा की अगुवाई वाली भाजपा-नीत एनडीए गठबंधन ने दो-तिहाई से अधिक बहुमत हासिल कर तीसरी बार सत्ता कायम की। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए शर्मा ने अवैध घुसपैठ नियंत्रण, आर्थिक विकास और स्थानीय हितों की रक्षा पर जोर दिया। उनका व्यक्तिगत प्रदर्शन और पार्टी की सफलता विकास और सांस्कृतिक संतुलन की राजनीति का उदाहरण बन गई। वहीं पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस की 15 वर्षीय सत्ता का अंत हो गया। भाजपा ने 200 से अधिक सीटें जीतकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। ममता बनर्जी अपनी भबानीपुर सीट पर सुवेंदु अधिकारी से हार गईं। तमिलनाडु में एमके स्टालिन अपनी कोलाथुर सीट पर हारे और उनकी पार्टी डीएमके पिछड़ गई, जबकि दिल्ली में अरविंद केजरीवाल अपनी न्यू दिल्ली सीट गंवा बैठे और आप की सत्ता चली गई।ये परिणाम संयोग नहीं हैं। इनमें एक स्पष्ट पैटर्न दिखता है। जिन दलों ने राम को काल्पनिक बताने, सनातन धर्म पर हमला करने या अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की राह अपनाई, जनता ने उन्हें नकार दिया। कांग्रेस लंबे समय से राम मंदिर का विरोध करती रही और राहुल गांधी जैसे नेताओं ने विदेशी मंचों पर राम को पौराणिक आकृति करार दिया। ममता बनर्जी ने ध्रुवीकरण की चरम राजनीति की एक भाषण

में "अल्लाह की कसम" और "काफिर" जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर विभाजन को बढ़ावा दिया। नतीजा यह कि उनकी अपनी सीट चली गई और पार्टी भारी हार का शिकार हुई। स्टालिन परिवार ने सनातन धर्म को "मलेरिया-डेंगू" जैसा बताकर जड़ से उखाड़ने की बात की और हिंदी विरोध को तेज किया। परिणामस्वरूप स्टालिन खुद अपनी सीट हार गए।

दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी का हाल भी कुछ अलग नहीं। केजरीवाल ने राम मंदिर को 'वोट बैंक' कहा और दिल्ली में 'धर्मनिरपेक्षता' के नाम पर हिंदू विरोधी नीतियां अपनाईं। विधानसभा चुनाव में आप हारी, और केजरीवाल खुद अपनी ही सीट से हार गए। उनका बयान, 'राम काल्पनिक हैं, विकास ही धर्म है,' हिंदू मतदाताओं को भड़काने वाला था। भाजपा ने दिल्ली नगर निगम चुनाव में भी झाड़ू लगा दी। केजरीवाल की नकारात्मक राजनीति, जैसे केंद्र सरकार को 'तानाशाह' कहना, देशविरोधी साबित हुई, और भ्रष्टाचार के आरोपों, शासन विफलताओं और नकारात्मक छवि ने उन्हें सत्ता से दूर कर दिया। अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी भी अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और पीडीए फॉर्मूले पर अड़ी हुई है। सनातन संस्कृति पर बार-बार सवाल उठाने की रणनीति 2027 के उत्तर प्रदेश चुनावों में जोखिम भरी साबित हो सकती है। इन सभी दलों की एक समानता रही, वे राम और सनातन को या तो नकारते रहे या राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते रहे। जनता ने इसका करारा जवाब दिया है।

क्या यह हिंदू जागरण का संकेत है? आंशिक रूप से हां। राम मंदिर आंदोलन, सांस्कृतिक गौरव और पहचान की राजनीति ने बहुसंख्यक समुदाय को एकजुट किया है। भारत की लगभग 80 प्रतिशत हिंदू आबादी में सांस्कृतिक आत्मविश्वास बढ़ा है। लेकिन इसे केवल धार्मिक जागरण तक सीमित करना गलत होगा। विकास, शासन प्रदर्शन, भ्रष्टाचार विरोध और क्षेत्रीय मुद्दे भी निर्णायक रहे। असम में शर्मा की घुसपैठ विरोधी नीतियां, बंगाल में टीएमसी की हिंसा और भ्रष्टाचार की छवि, तमिलनाडु में स्टालिन सरकार की चुनौतियां, ये सब कारक काम कर गए। जनता का संदेश साफ है- नकारात्मक और देश-विरोधी राजनीति अब नहीं चलेगी।

ममता बनर्जी के 'काफिर' वाले बयान, उद्धयनिधि स्टालिन का सनातन पर हमला, कांग्रेस का राम मंदिर विरोध और डीएमके की द्रविड़ अलगाववादी विरासत, इन सबने 'एंटी-हिंदू' छवि बनाई। जबकि भाजपा ने 'सबका साथ, सबका विकास' के साथ सनातन मूल्यों को मुख्यधारा में लाया।

असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और दिल्ली जैसे राज्यों में मतदाताओं ने स्पष्ट संकेत दिया है कि विभाजनकारी, नकारात्मक और सनातन संस्कृति पर प्रश्न उठाने वाली राजनीति अब स्वीकार्य नहीं रही। जो नेता या दल राम को प्रतीक मानकर राष्ट्रहित, सांस्कृतिक गौरव और समावेशी विकास की राह पर चले, वे सफल हुए, जबकि विरोध की राह चुनने वालों को करारी हार का सामना करना पड़ा।

हेमंत बिस्वा शर्मा जैसे नेताओं का कांग्रेस से भाजपा जाना और सफलता इसी का प्रतीक है। फिर भी, भारतीय चुनाव बहुआयामी हैं। आर्थिक मुद्दे जैसे बेरोजगारी और महंगाई विपक्ष को मौका दे सकते हैं। अल्पसंख्यक वोट एक तरफा विपक्ष को जाता रहा, लेकिन हिंदू वोटों का एकीकरण निर्णायक साबित हुआ। विपक्षी गठबंधनों में एकता की कमी और क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएं भी उनकी कमजोरी बनीं। भाजपा को सत्ता में अहंकार से बचना होगा, अन्यथा असफलता का खतरा है। रामायण की कथा में राम विजयी हुए क्योंकि वे धर्म, न्याय और प्रजा-हित पर अडिग रहे। आज की राजनीति में भी यही सूत्र काम कर रहा दिखता है। जो दल सनातन को शत्रु मानते हैं या राम को नकारते हैं, उन्हें अपनी रणनीति बदलनी होगी। देशहित, सांस्कृतिक जड़ों का सम्मान और समावेशी विकास ही सफलता की कुंजी है। हाल के चुनावों से जो सबसे स्पष्ट संकेत मिलता है, वह यह है कि जनता अब 'नकारात्मक राजनीति' से थक चुकी है। केवल विरोध या विभाजन की राजनीति लंबे समय तक टिकाऊ नहीं रहती। जनता उन नेताओं को प्राथमिकता देती है जो स्पष्ट दृष्टि, मजबूत नेतृत्व और ठोस काम दिखा सकें। यह भी सच है कि राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक गर्व और धार्मिक प्रतीक अब राजनीति का हिस्सा बन चुके हैं। लेकिन अंततः मतदाता यह देखता है कि उसकी जिंदगी में क्या बदलाव आया।

जनता ने स्पष्ट कर दिया है कि विभाजन की लंका जलनी तय है, जबकि एकता और विकास की अयोध्या फल-फूल रही है। सभी राजनीतिक दलों को इस सबक से सीख लेनी चाहिए। राष्ट्रहित सर्वोपरि, सत्ता उसकी सेवा में मिलती है।

इन चुनाव परिणामों का निष्कर्ष एक ही है, भारत का हिंदू मतदाता अब जागरूक है, संगठित है और दीर्घकालीन स्मृति से संपन्न है। वह उन नेताओं को याद रखता है जिन्होंने उसकी आस्था को तिरस्कृत किया, उसके देवताओं को काल्पनिक कहा, उसके धर्म को रोग की उपमा दी। जनतंत्र में मतपेटी ही अंतिम न्यायालय है और इस न्यायालय ने अपना ऐतिहासिक निर्णय सुना दिया है। अब जो भी राजनीति में सत्ता चाहता है, उसे जनभावनाओं का, राष्ट्रीय अस्मिता का और सनातन संस्कृति का सम्मान करना ही होगा। जो राम का नहीं होगा, उसकी लंका लगना तय है, यह कोई भविष्यवाणी नहीं, यह भारत की जनता का स्पष्ट जनादेश है। ■

पहनिए व्यवहार कुशलता के गहने

पूनम भटनागर
लेखिका

अंकित रूमा पर चिल्लाने लगा कि उसने उसके आफिस में फोन कर पता क्यों नहीं किया कि वह कब आएगा, वह रूमा को सुनाता रहा था, रूमा ने बतलाना चाहा पर गुस्से में अंकित ने सुना नहीं, जब दस मिनट से ज्यादा हो गये तो रूमा अंदर वाले कमरे में चली गई। थोड़ी देर बाद अंकित का गुस्सा शांत हुआ तो उसे पछतावा हुआ कि हो सकता हो रूमा को कुछ काम आ गया हो, वरना उसे भी अंकित की उतनी ही चिंता है वह गया और रूमा को मना लाया, और बात बहुत हल्के में ही रह गई।

पर रूमा अगर 'व्यवहार कुशलता' का परिचय न देते हुए उसके गुस्से का जवाब गुस्से से देती तो बात इतनी आसान नहीं रही होती, दोनों कितने ही दिन मुंह फुलाए एक इस करवट तो दूसरा उस करवट होता रहता। 'व्यवहार कुशलता' है ही वो कला जिसमें किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाये बिना अपना कार्य सम्पन्न करना होता है यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का वो दर्पण है जो व्यक्ति को इसके द्वारा (परिवार, कार्य स्थल व समाज) जीवन के हर पहलू को उजागर कर दर्शनीय योग्य बनाता है, पर उसके लिए हमें व्यवहार कुशलता से जुड़ी बातों की तरफ गौर करना पड़ेगा।

व्यवहार कुशलता के लक्षण-

1. शिष्टाचार, और संयमित बोली - दूसरे के साथ यदि हम शिष्ट व्यवहार करें और बड़े, छोटे का लिहाज रखें, अपने शब्दों में विनम्रता लाएं तो हम इस गुण का पालन कर पाएंगे। उदाहरण के लिए रेशमा की सास उससे नाराज थी और कह रही थी कि वह उसके भाई के आने पर घर से चली गई, उनका स्वागत नहीं किया, उसकी सास ने उसे कई कटु वचन बोले पर व्यवहारिकता दिखाते हुए रेशमा सास से बोली, सौरी मम्मी जी गलती तो मुझसे हुई, पर मुझे आवश्यक कार्य था, अन्यथा ऐसा नहीं होता, हम मामा जी को फिर से बुला लेते हैं और उन्हें पूरा सम्मान देंगे। सास के जलते हृदय पर व्यवहार कुशलता का ठंडा पानी जैसे तुरंत असर किया और वह सामान्य हो गई।

किसी को नाराज किए बिना ही अपना काम बना लेना विनम्रता और संयमित व्यवहार कहलाता है।

2. सुख दुःख में साथ देना - कोई सहकर्मी या परिचित दुख में है तो आपको चाहिए कि आप उसका दुख बंटाए।

रमेश का बेटा घर छोड़कर चला गया। यह बात राम को पता चली तो वह काफी समय रमेश को सांत्वना देता रहा और कहता रहा वह उसकी मदद के लिए है, रमेश को यह व्यवहार आजीवन याद रहेगा।

इसी तरह सुख का भागीदार बनना भी अपने आप में दूसरे को विशेष अनुभूति दे जाता है।

व्यवहार कुशल बनने का तरीका - पहले तो हम स्वस्थ हो, तब भी व्यवहार कुशलता, व्यवहार में ला पाएंगे। स्वास्थ्य के लिए, शारीरिक स्वस्थता के लिए व्यायाम कीजिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए अपने विचार व आचरण को स्वस्थ रखिए, भावनात्मक स्वास्थ्य दूसरे के प्रति भावना रखिए, बौद्धिक आचरण दुरूस्त रखें। यानि मन, वचन कर्म से स्वस्थ रहें। फिर अपने वचनों को व बातें तोलकर बोलें, व्यर्थ की बातों से जहां हानि होगी वहीं मतभेद उत्पन्न होंगे, लोगों में वैमनस्य उत्पन होगा।

क्योंकि भांति भांति के व्यक्ति हैं यदि आप अनेकवादि दृष्टि कोण तो लेकर चलोगे तो लोगों को व्यवहारिक तौर पर परख कर बात कर पाओगे। इसलिए जैसा एक के लिए वैसा ही सब के लिए वाला सिद्धांत काम नहीं करेगा। किसी को प्रमोट करने की भावना होना बहुत जरूरी है। सिर्फ स्वयं की प्रशंसा नहीं बल्कि दूसरे की भी प्रशंसा करनी आनी चाहिए।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की कदम कदम पर जरूरत होती है। यदि हम चाहे की हम स्वयं से ही सब कर लेंगे, तो यह हमारा भ्रम है। वो कहते हैं न कि हमें धूल की भी जरूरत पड़ सकती है, समाज तो बहुत बड़ी चीज है। हिमालय पर भी हम चले जाएं वहां भी चीजें जुटाने के लिए समाज की आवश्यकता पड़ ही जाएगी।

व्यवहार कुशलता के लाभ व हानियां -

संतुलित व मजबूत रिश्ते - इससे व्यवहारिक व व्यापारिक जीवन में संतुलन आता है और सभी तरह के रिश्तों में मजबूती आती है, आत्मविश्वास बढ़ता है। नेतृत्व क्षमता बढ़ती है। टीम वर्क में योगदान मिलता है व सभी का सहयोग प्राप्त होता है और टकराव की स्थिति नहीं आती। सबसे समझदारी व मेल मिलाप से काम करवाने का अवसर मिलता है। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है। ऐसे व्यक्ति से हर कोई प्रभावित रहता है।

दूसरे के साथ यदि हम शिष्ट व्यवहार करें और बड़े, छोटे का लिहाज रखें, अपने शब्दों में विनम्रता लाएं तो हम इस गुण का पालन कर पाएंगे। उदाहरण के लिए रेशमा की सास उससे नाराज थी और कह रही थी कि वह उसके भाई के आने पर घर से चली गई, उनका स्वागत नहीं किया, उसकी सास ने उसे कई कटु वचन बोले पर व्यवहारिकता दिखाते हुए रेशमा सास से बोली, सौरी मम्मी जी गलती तो मुझसे हुई, पर मुझे आवश्यक कार्य था, अन्यथा ऐसा नहीं होता, हम मामा जी को फिर से बुला लेते हैं और उन्हें पूरा सम्मान देंगे। सास के जलते हृदय पर व्यवहार कुशलता का ठंडा पानी जैसे तुरंत असर किया और वह सामान्य हो गई।

हानियां - अवसरवादिता - आजकल ज्यादा जी हजूरी को लोग चाटूकारों का नामकरण कर देते हैं। आफिस में भी देखा होगा लोग कह ही देते हैं कि यह तो चमचा है। लगातार ऐसी परिस्थिति झेलने से व्यक्ति के अंदर मानसिक तनाव पनपने लगता है, जो हर एक को खुश करने का परिणाम होता है और व्यक्ति चिड़चिड़ापन का शिकार हो जाता है।

ज्यादा व्यवहार कुशलता व्यक्ति के अंदर अहंकार की भावना विकसित करती है। उदाहरण के लिए सोमेश व्यवहार कुशलता की सीढ़ी चढ़कर कंपनी का सीईओ बन गया। पर अहंकार के चलते एक गलत फैसला उसे नीचे ले आया।

तो देखा आपने व्यवहार कुशलता जहां इस एआई, कम्प्यूटर के भौतिकवादी युग में एक सॉफ्ट टाए की तरह है क्योंकि इस मशीनी युग में व्यक्ति से इस तरह के व्यवहार की अपेक्षा कर पाना थोड़ा मुश्किल जरूर है पर यदि व्यक्ति व्यवहार कुशलता का गहना पहन व्यवहार करें तो उसे किसी कृत्रिम आभूषण की आवश्यकता नहीं रहेगी। कई बड़ी हस्तियां, अब्दुल कलाम, अमिताभ बच्चन, अब्राहिम लिंकन जो शिष्टाचार निभाने के लिए अपनी शाही बग्घी से नीचे उतर आए और अन्य इस कुशलता के चलते नाम कमा रहे हैं। तो धारण करिए ये वास्तविक गहने और अपने व्यक्तित्व में सु मधुरता ग्रेस लाइए। व्यवहार कुशलता आपके लिए वरदान साबित होगा। इससे आप लोकप्रिय तो बनेंगे, साथ ही आप अपने व्यक्तित्व की मीठी छाप औरों पर छोड़ेंगे और दूसरों का दिल जीत पाएंगे। ■

तुलसीदास और रहीम की वैचारिक समानता

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

गोस्वामी तुलसीदास अब्दुल रहीम खान से उम्र में बड़े थे। गोस्वामी जी का जीवनकाल सन् 1532 से 1623 के बीच का है। गोस्वामी जी कुल 91 वर्ष जीवित रहे। अब्दुल रहीम खान का जन्म 1556 ईश्वी में हुआ। वह 1627 ईश्वी तक 71 वर्ष जीवित रहे। इस तरह तुलसीदास और रहीम के जीवन का समय लगभग एक है। तुलसीदास रहीम से वय में बड़े थे। पर दोनों के बीच मैत्री और आदर समझदारी पर टिकी थी। दोनों परस्पर अलग धार्मिक आस्था से जुड़े थे। विशेष बात यह समझने की है कि रहीम इस्लाम के सारे रीति रिवाज अपनाते थे पर हिन्दू संस्कृति के सिद्धान्तों से उनका गहरा नाता था। इसीलिए तुलसी और रहीम में वैचारिक समानता थी। सनातन संस्कृति के मानकों पर रहीम को भरोसा था। हिन्दुओं की धर्म के प्रति गहरी आस्था का वह आदर करते थे। दोनों के बीच समन्वय की ऐसी डोर बंधी थी कि विपरीत परिस्थितियां आने पर भी यह मैत्री बंधन कभी छिन्न नहीं हुआ। श्रीराम तुलसीदास के अनन्य थे। तो रहीम ने भी सनातन संस्कृति के अद्वैतवाद (कण कण में परमात्म शक्ति की व्याप्ति) के सिद्धान्त को अकाट्य सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया था।

रहीम ने श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों को महान आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक के रूप में मान्य किया था। रहीम ने धर्म के बीच खाईं खोदने की खुलकर निन्दा की। रहीम के मन में तुलसीदास सार्थक धर्म के एक मूर्त प्रतिमान थे। जबकि तुलसीदास का मानना था कि जिस तरह चन्दन के पेड़ में अनेक विषधर भुजंग लिपटे रहते हैं फिर भी चन्दन विषाक्त नहीं होता उसी तरह अब्दुल रहीम कितनी भी विपरीत परिस्थितियों में रहें पर उनके हृदय की पवित्रता भंग नहीं हो पायी।

जो रहीम उत्तम प्रकृति का, करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग ।।

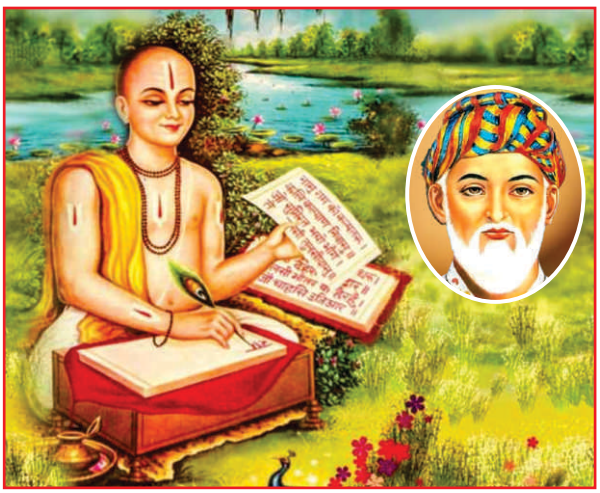

गोस्वामी तुलसीदास की ख्याति उस कालखण्ड के मुगल शासक अबुल फतह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर तक अच्छी तरह पहुंच चुकी थी। अकबर को उसके निकटस्थ चुगलखोर यह भी बता चुके थे कि रहीम और तुलसी के बीच मैत्री बड़ी गहरी है। अकबर ने कई बार रहीम से कहा तुलसी को मेरे समक्ष हाजिर करो। वह हिन्दुओं के मन पर राज करने वाला कवि है। यदि उसकी कलम से मेरे प्रति लगाव का संदेश भारत के हिन्दुओं तक जाएगा तो इस देश में कोई शत्रु हमारे सामने टिक नहीं पाएगा। हिन्दुओं का भरोसा पाने की मेरी इच्छा पूरी होगी। अकबर के हठ करने पर रहीम ने एक पंक्ति का पत्र तुलसीदास को भेजा। जो इस तरह था-

सर सूखे पंछी उड़ें, औरहिं सरन समाहिं।

इसका भावार्थ यह है कि एक आश्रय नहीं रहने पर दूसरा आश्रय स्वीकार कर लेना बुद्धिमत्ता कही जाती है। रहीम की पंक्ति कहती है कि श्रीराम का कालखण्ड बीत चुका है। सारी नेकियाँ उनमें थीं। पर अब वह आपकी सहायता करने नहीं आएंगे। इसलिए आज के शासक अकबर की शरण में आ जाइए। जैसे बगुला पक्षी एक तालाब के सुख जाने पर मछलियों की खोज में दूसरे तालाब में उड़कर पहुँच जाता है। सूखे तालाब में आस लगाये बैठे रहना व्यर्थ है।

गोस्वामी तुलसीदास ने जो उत्तर लिख कर रहीम को भेजा उसे उन्होने सीधे अकबर के समक्ष पढ़ कर भावार्थ भी बता दिया। तुलसी दास ने रहीम को उत्तर दिया-

दीन मीन बिनु पच्छ के कह रहीम कत जाएं।।

तुलसी बाबा अपने श्रीराम को अनन्य मानते थे। उनकी आस्था विश्वास और भरोसे में तनिक भी संशय नहीं था। उन्होंने जो उत्तर दिया बहुत सटीक था। तुलसीदास ने कहा - यह ठीक है कि सरोवर के सूखने पर बगुले उड़ जाते हैं। दूसरे सरोवर में पहुँच जाते हैं। पर एक बात की ओर रहीम तुम्हारा ध्यान क्यों नहीं गया कि सूखे सरोवर की मछलियां तो पंख विहीन होती हैं कहीं नहीं जाती हैं। वह बेचारी तो बगुलों की तरह उड़ नहीं सकतीं। उनको वह सूखा सरोवर अपने गर्भ में शरण देकर फिर से जलाशय भरने तक जीवित रखता है।

तुलसीदास ने इस तरह अकबर के नेत्र खोल दिये। श्रीराम को त्याग कर मुगल शासक का गुणानुवाद करने वाला चाकर कवि बनने से बाबा तुलसीदास ने साफ मना कर दिया था। प्रश्न और उत्तर की इन दो पंक्तियों को मिलाकर पढ़ने से एक दोहा बनता है। जो रहीम के दोहों के साथ लिखा मिलता है।

रहीम और जहांगीर : रहीम को अकबर के मरने के बाद नये बादशाह अकबर के बेटे जहांगीर के साथ निर्वाह करना पड़ा। जहांगीर बहुत घटिया व्यक्ति था। विलासिता और अतिशय स्त्री गमन तो मुगलों तुर्कों का घोषित दोष होता था। अपने बाप से बगावत करने में मुगलों को तनिक संकोच नहीं होता था। जहांगीर ने अपनी जवानी में अब्बा अकबर को बहुत अपमानित किया था। उसी तरह जहांगीर के बेटे शाहजहां ने बड़े होकर जहांगीर की नाक में दम कर दिया था। जहांगीर अफीम - शराब ही नहीं हर नशा करने को आतुर रहता था। इस दशा में महल में उत्पात करने लगता। कब किस बाँदी को पकड़ कर जिद करने लगे इससे हर दिन चिल्लाहट मचती।

बाप बेटे की तनातनी के समय की बात है। एक दिन जहांगीर ने रहीम खान को देखते ही इंगित करते हुए भरे दरबार में कहा कि तूने मेरे विरुद्ध बगावत के लिए मेरे बेटे को उकसाया है। रहीम ने संयत रहते हुए सत्य कह दिया। स्वीकार किया कि वह शाहजहां के पक्ष से सहमत हैं। यह भी बोल गये कि आपको गद्दी से हट जाना चाहिए। शासन चलाने की आपसे बेहतर कुव्वत शहजादे शाहजहां में है। आप बूढे हो चुके हैं। फिर नशे की लत ने आपको बर्बाद कर दिया है। सल्तनत का हर इंसान खासकर नौजवान कहते हैं कि जहांगीर से बेहतर हुकूमत फरजंद (बेटा) शाहजहां कर सकते हैं।

इतनी बात सुनते ही जहाँगीर को गुस्सा आ गया। वह नशे में था। तुजुक ए जहांगीरी (आत्मकथा) में जहांगीर ने स्वयं स्वीकारा है कि अफीम और शराब के नशे ने उसकी सोचने समझने की सारी क्षमता को बर्बाद कर डाला है। जहांगीर ने इस प्रसंग का भी एक जगह उल्लेख किया कि अब्दुल रहीम को दरबार में बेइज्जत करना, उसको भगा देना और उसके दो बेटों का कत्ल करा देना बहुत गलत था। यह सब जहांगीर ने अफीम के नशे में बेसुध होकर करने की स्वीकारोक्ति की थी।जहांगीर बदचलनी के अपने गन्दे चरित्र के लिए अपने अब्बा अकबर को दोषी मानता था।

जहांगीर के स्वभाव से आजिज आकर शहजादे शाहजहां ने दरबार के प्रायः हर व्यक्ति को अपने पक्ष में कर लिया था। रहीम ने उनको सचेत किया तो जहांगीर भेड़िया बनकर उनके परिवार पर टूट पड़ा। रहीम को जब जहांगीर ने दरबार से खदेड़ देने का आदेश दिया तो वह चले गये। उनको डर था कि जहांगीर उनके पीछे कातिल भेजेगा। इसलिए वह चतुराई से भागे और चित्रकूट जाकर छिपकर रहने लगे। रहीम की पहली बेगम से तीन बेटे थे। उनमें से दो बेटों मिर्जा ईरीज और दाराब को जहांगीर ने अपने सामने पकड़वा कर मरवा दिया। अकेला करन मिर्जा बचा रह गया। रहीम के अन्य बीबियाँ भी थीं। उनसे कई बेटे बेटियां थीं। उनमें रहमान दादू ऐसा था जो इस्लामिक सलाहियत से बचता था। मुल्लाओं को उनकी झूठी बातों के लिए बहुत भला बुरा कहता था। रहीम जब आगरा के दरबार से जहांगीर द्वारा दरबारियों के समक्ष अपमानित किये गये और उन्हें प्राण बचाकर भागना पड़ा तो यही बेटा रहमान दादू सहायक बना था। वह चित्रकूट तक साथ गया था बहुत अच्छा तलवारबाज होने के साथ शौकिया बहुरुपिया था। रहीम का पीछा करते कातिल गये थे पर दादू ने अब्बा के साथ खुद का वेश बदल रखा था। चित्रकूट में अपने रहने की बात रहीम खान ने एक दोहे में स्वीकार करी थी।

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा परत है, सो आवत यहि देश।

चित्रकूट में रहीम को छिपकर रहना पड़ा था। उनको भय था कि जहांगीर अपने कूट चरित्र के हत्यारों को भेजकर उनकी हत्या करा देगा। इसीलिए अज्ञातवास की तरह उन्होंने विपदा के दिन बिताये। यह बात 1622–23 की है। छिपकर रहते हुए रहीम एक भड़भूजे के यहां काम करते थे। ताकि कोई पहचान नहीं पाये। उन्हीं दिनों में एक दिन रीवाँ के राजा ने एक भड़भूजे का भार झोंकते रहीम को देखा। राजा ने पुष्टि के लिए हाथी के हौदे पर बैठे-बैठे एक पंक्ति बोली। तो रहीम से नहीं रहा गया। यह संवाद सारा प्रसंग दर्शाता है।

जा के सिर पर भार अस, सो कत झोंकत भार इव।

राजा रीवां के कथन का भाव है कि जो महान व्यक्ति बादशाह का महामंत्री होते हुए गम्भीर दायित्वों से बंधा है। सल्तनत का ऐसा सबसे प्रभावी अब्दुल रहीम खान एक भड़भूजे का भार क्यों झोंक रहा है। राजा रींवा ने सोचा कि रहीम ही होंगे तो प्रतिक्रिया देंगे। रहीम से सच में नहीं रहा गया। उन्होंने राजा रीवां को पहचान लिया था। राजा रीवां पर एक बार जहांगीर ने भारी देनदारी दण्ड स्वरूप थोप दी थी। राजा परेशान होकर रहीम के पास पहुँचे और मदद मांगी थी। रहीम ने किसी तरह उनको दण्ड राशि से मुक्त कराया था। यही दोनों के बीच लगाव का मुख्य कारण था।

रहीम खान से बहुत सुन्दर उत्तर रीवां के राजा को दिया था -

रहिमन उतरे पार, झोंकि भार सब भार में ।।

अब्दुल रहीम खान का उत्तर स्प्ष्ट था कि मैंने अपना सारा भार उतार फेंका है। अब भार मुक्त हो गया हूँ। चित्रकूट से दूर राजा के महल में रहने का प्रस्ताव उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। कुछ समय बाद जहांगीर को शहजादे ने बताया था कि रहीम चित्रकूट में हैं। शाहजहां ने स्वयं आग्रह पूर्वक उन्हें बुला लिया था । जहांगीर से सुलह करायी थी। इस तरह रहीम ने अपने जीवन के अन्तिम समय तक जहांगीर की सेवा की। रहीम और जहांगीर दोनों 1927 में कुछ दिनों के अन्तर पर मरे थे।

चौथी पीढ़ी के शाहजहां ने गद्दी पर बैठने से पहले भाई शहरयार उनके बेटों सहित शाही परिवार के सभी आठ पुरुषों बच्चों तक को मार दिया था। इस तरह मुगलिया सल्तनत की खूनी तर्बियत (परम्परा और संस्कार) का सारा घटियापन शाहजहां में भी था। शाहजहां को इसके बेटे औरंगजेब ने जेल में डाल कर भोजन तक बन्द कर कुछ चने देता था। अपने भाई दारा को मारकर उसका कलेजा निकलवा कर अब्बा शाहजहां को भेंट में भेजा था। ■

आधुनिकता का आकर्षण और बचपन का भटकाव

कैलाश चन्द्र
सामाजिक कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ स्तम्भकार

क भी आपने गौर किया है कि आज के बच्चे कब बड़े हो जाते हैं? नहीं, उम्र से नहीं, व्यवहार से। दसवीं कक्षा से पहले ही बालकों में स्मार्ट फोन, फिटनेस जिम, ब्यूटी पार्लर, सोशल मीडिया ट्रेंड्स और फैशन शो जैसे विषयों की समझ आ जाती है। यह समझ नहीं, बल्कि एक अनकही प्रतिस्पर्धा है- जो दिखने, बनने और बिकने की होड़ से भरी हुई है। पर क्या ये अपने आप यूं ही आ जाती है?

ये हमारे ही बच्चे हैं, जो स्कूल की यूनिफॉर्म उतार कर इंस्टाग्राम के लिए पोज देते हैं। ये वही हैं, जो सुबह गणित की कोचिंग के बाद शाम को जिम में 'एब्स' बनाने जाते हैं। कहीं फैशन शो का हिस्सा बन रहे हैं, तो कहीं हेयर स्टाइल और मेकअप के नए ट्रेंड्स पर चर्चा कर रहे हैं। प्रश्न यह नहीं कि यह सब गलत है या नहीं- प्रश्न यह है कि क्या यह आयु, मानसिकता और संस्कार से मेल खाता है? कहीं हम भी यही तो नही कर रहे?

घर से विद्यालय और फिर... एक नई दुनिया का किवाड़ : बचपन में माता-पिता बच्चों को स्कूल भेजते हैं यह सोचकर कि वहां उन्हें शिक्षा मिलेगी, संस्कार बनेंगे, चरित्र निर्माण होगा। लेकिन आज की शिक्षा पद्धति में विषयों की रटंत प्रणाली और अंकों की दौड़ ने जीवन-निर्माण को पीछे धकेल दिया है। बच्चों को सिखाया जा रहा है कि कैसे सफल बनो, कैसे नंबर लाओ, लेकिन यह कोई नहीं सिखा रहा कि कैसे अच्छा इंसान बनो, कैसे स्वयं से जुड़ो।

परिस्थितियां ऐसी बन गई हैं कि मूल्य आधारित शिक्षा, जीवन कौशल और आत्मानुशासन जैसे विषय अब "पुराने जमाने की बातें" माने जाने लगे हैं। आज का बच्चा किताबों से ज्यादा यूट्यूब से सीखता है, वो गलत नहीं पर क्या सीख रहा है इसकी घर पर किसी को जानकारी नहीं ये कई बार जोखिम भरा होता है जिसके दुष्परिणाम हम समाचारों में देख रहे हैं और संस्कारों की जगह ट्रेंड्स से प्रभावित होता है।

भौतिकता के आकर्षण केंद्र : बच्चों की नई पाठशाला? : जिमखाना, ब्यूटी पार्लर, रंग-रोगन, फैशन मॉडलिंग आदि शब्दों को सुनकर पहले बड़े लोग आकर्षित होते थे। आज ये 8वीं-10वीं कक्षा के बच्चों की दुनिया का हिस्सा बन चुके हैं।

माँ कहती है- "बेटा थोड़ा स्टाइलिश बनो, स्मार्ट लगो।"

पापा कहते हैं - "आजकल कॉन्फिडेंस दिखना चाहिए।" और बच्चे समझते हैं- "बिना दिखे कोई पूछता नहीं!"

यहां से शुरू होता है एक "बनावटी-दिखावटी आत्मविश्वास" का लुभावना सफर जहां सुंदरता, पहनावा, और सोशल मीडिया की लोकप्रियता ही बच्चे के "आत्मसम्मान" का मापदंड बन जाते हैं।

विकास या विकृति? - एक आत्ममंथन जरूरी है : कई माता-पिता को यह लगता है कि उनका बच्चा आधुनिक हो रहा है खुलकर बात करता है, प्रतिक्रिया को तर्कशास्त्र मान लेते हैं। और वह अपने लुक्स का ध्यान रखता है, ट्रेंड्स में पीछे नहीं है। यह सब अच्छा हो सकता है, यदि उसमें संयम, विवेक, परिस्थिति बोध और मूल्यबोध भी साथ-साथ विकसित हो रहे हो। परंतु अधिकतर मामलों में यह देखा गया है कि बाहरी चमक के पीछे भीतरी खोखलापन पनपता है।

उदाहरण के लिए 14 साल का अर्जुन, जो रोज जिम जाता है, अब किताबों से दूर होता जा रहा है।

15 साल की साक्षी, जो मेकअप और इंस्टाग्राम रील्स में माहिर है, लेकिन परिवार की बातचीत में नहीं के बराबर जुड़ती है।

13 साल का मयंक, जो ज्यादातर "स्वैग" में रहता है, पर आत्म-विश्वास नहीं, "लाइक" 'प्रशंसा' की तलाश में जीता है।

ये मात्र नाम नहीं, हर गली-मोहल्ले, हर स्कूल, और हर परिवार में आज के दौर की खुली सच्चाई बन चुके हैं।

समाज की भूमिका : प्रोत्साहन या प्रपंच? : समाज ऐसे बच्चों को "प्रगतिशील", "खुले विचारों वाला", और "आधुनिक सोच वाला" कहकर सराहता है। पर क्या कभी किसी ने यह पूछा कि उनके भीतर आत्मसंवाद है अथवा बाहर परिसंवाद है या नहीं?

क्या वे अपने मूल्यों से जुड़े हैं या केवल ब्रांड्स से? क्या वे दिखने में आकर्षक हैं या वास्तव में संतुलित और संतोषी हैं?

समाज ने भी सफलता के मापदंड बदल लिए हैं। जो बच्चा अच्छी अंग्रेजी बोलता है, सेल्फी अच्छे लेता है, या स्टाइलिश कपड़े पहनता है वह "कूल" है। और जो बच्चा पूजा करता है, किताबें पढ़ता है, बुजुर्गों से बात करता है वह "बोरिंग" या "पुराना" माना जाता है।

क्या यह सचमुच बच्चों की गलती है?: कहना आसान है कि बच्चे बिगड़ रहे हैं। पर सच यह है कि बच्चे भटक नहीं रहे, वे दिशा नहीं पा रहे। वे वही देख रहे हैं जो हम उन्हें दिखा रहे हैं। वे वही बन रहे हैं जो समाज उन्हें बना रहा है। वे वही चुन रहे हैं जिसे हमने उन्हें "सफलता" का रास्ता बताया है।

बचपन में माता-पिता बच्चों को स्कूल भेजते हैं यह सोचकर कि वहां उन्हें शिक्षा मिलेगी, संस्कार बनेंगे, चरित्र निर्माण होगा। लेकिन आज की शिक्षा पद्धति में विषयों की रटंत प्रणाली और अंकों की दौड़ ने जीवन-निर्माण को पीछे धकेल दिया है। बच्चों को सिखाया जा रहा है कि कैसे सफल बनो, कैसे नंबर लाओ, लेकिन यह कोई नहीं सिखा रहा कि कैसे अच्छा इंसान बनो, कैसे स्वयं से जुड़ो।

एक नई शुरुआत कैसे करें? : 1. दिखावे से ज्यादा संवाद दें : हर दिन कम से कम 15 मिनट ऐसा हो जहां बच्चा अपनी बात कह सके और अभिभावक बिना टोके, बिना सुधार किए, बस सुनें।

2. आधुनिकता में मर्यादा सिखाएं : बच्चों को यह समझाएं कि आधुनिकता और संस्कार एक साथ चल सकते हैं। जिम (Health Center) जाना गलत नहीं, पर शरीर के साथ मन, विवेक, बुद्धि और आत्मा को भी गढ़ना उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

3. सोशल मीडिया से वास्तविक समाज की ओर लौटें : पारिवारिक कार्यक्रम, सामूहिक भोज, दादी-नानी की कहानियां, गपशप, सम्बन्धों का महत्व आदि को भूले बिसरे नहीं, बल्कि अपनाये।

4. प्रेरणा के नए प्रतिमान बनें : महंगे गैजेट्स वाले हीरो नहीं, बल्कि परिश्रमी किसान, ईमानदार शिक्षक, समर्पित सेवक जैसे जीवन के नायक बनाकर दिखाएं।

5. संवाद से संबंध और संस्कार बनें : हर बच्चा सुनना चाहता है, स्वयं को समझाना चाहता है। उसके भीतर की बेचैनी को एक माँ की ममता, एक पिता का धैर्य और एक गुरु की दृष्टि ही साध सकती है। नहीं सुनते तो वो बाहर सुनाने-सुनने चला जा रहा है।

एक आत्मीय निवेदन हम सब चाहते हैं कि हमारे बच्चे सफल हों। पर केवल डिग्री, पैसा, और दिखावा ही अगर सफलता की कसौटी बनेगा तो बहुत कुछ पीछे छूट जाएगा। जिसमें आत्मीयता, आत्मगौरव और जीवन की सच्ची समझ शामिल है।

आज की आधुनिकता = उपभोक्तावादी प्रदर्शन

आवश्यक आधुनिकता = आत्म-नियंत्रण, विवेक और सृजनात्मकता के साथ नवाचार सवाल यह नहीं है कि बच्चा जिम जाए या कला में रुचि ले, सवाल यह है कि क्या उसमें 'विवेक, संस्कार, और कर्तव्यबोध' है?

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसा माहौल बनाएं जहां बच्चे आत्मविश्वासी हों, पर दिखावे के नहीं; जहां वे आधुनिक हों, पर अपनी जड़ों से कटे हुए नहीं; जहां वे स्वतंत्र सोचें, पर संस्कारों को सींचते हुए।

शरीर संवारने की होड़ है, पर आत्मा उपेक्षित है। आकर्षक दिखने की भूख है, पर आत्मचिंतन का अकाल है। आधुनिक बनने की चाह है, पर मूल्य और मर्यादा से मोहभंग है। ■

कॉकरोच व्यंग्य : सत्ता, सोशल मीडिया और विपक्ष का स्वप्नलोक

मई के महीने की रात का समय था। श्मशान के पास का जंगल रात में भी गर्म हवाओं से तप रहा था। भीषण गर्मी से पौधों की टहनियां तक मुरझा चुकी थीं। उल्लू चुप थे, चमगादड़ सुस्त और हवा में ऐसी बेचैनी थी मानो पूरा लोकतंत्र ही गर्मी से उबल रहा हो। विक्रम अपने कंधे पर बेताल को लादे आगे जा रहे थे। लेकिन आज बेताल शांत था। उसके चेहरे पर न शरारत थी, न पहेली, न ठहाका। कुछ दूर चलने के बाद बेताल बोला- "राजन! आजकल मेरा हाल विपक्ष जैसा हो गया है- मई की दोपहरी की गर्मी से बेहाल और भीतर से भी उदास। लेकिन मुझे एक बात समझ नहीं आती। आजकल राजनीति में आइडिया कम और वायरल रील अधिक क्यों दिखाई देती हैं?"

विक्रम हौले से मुस्कुराए। -"हे बेताल! ये कलियुग का लोकतंत्र विचारधाराओं से बहुत कम और मीम, रील, ट्रेंड तथा वायरल हैशटैग से अधिक चलने लगा है।"

बेताल ने गर्दन उचकाई। ''मैं कुछ समझा नहीं राजन!

विक्रम कहा- 'तो सुन। यदि आज विलियम शेक्सपियर जीवित होते तो, शायद वे और कोई नाटक लिखने के बजाए नया राजनीतिक व्यंग्य लिखते और उसका शीर्षक इस प्रकार होता- द कॉकरोच रिपब्लिक! एक ऐसा रिपब्लिक जहां विपक्ष कॉकरोच के सहारे है। उसकी कोई विचारधारा नहीं, ट्विीटर पर बैठ कर चिड़िया उड़ा रहा है। और कल्पना करा रहा है। हे कॉकरोच महाराज कोई चमत्कार हो जाए। विपक्ष जनता से कम, कॉकरोच पार्टी की सोशल मीडिया के उतार-चढ़ाव पर अधिक फोकस कर रहा है।

बेताल मुस्कराया। ''तो क्या अब लोकतंत्र कॉकरोच से चलेगा ?"

विक्रम बोले- ''विलियम शेक्सपियर ने अपने प्ले As You Like It में लिखा था- 'All the world's a stage, And all the men and women merely players.' अर्थात यह समूचा विश्व एक रंगमंच है और हम सभी इंसान एक अभिनेता की तरह हैं।

आज हिन्दुस्तान की राजनीति ठीक वैसी प्रकार की हो चुकी है। कोई मीडिया के सामने

लाल किताब हाथ में लेकर संविधान बचा रहा है। मैंने पता करवाया कि क्या बाकई संविधान खतरे में है? पता चला कि संविधान तो चुस्त, दुरुस्त और तंदुरुस्त है। और एक बात, देश की सबसे बड़ी-बूढ़ी पार्टी के जमाने में ही संविधान खतरे में था।

बेताल बोला- ''और इस पूरी नौटंकी में कॉकरोच की एंट्री कहां से हो गई?"

विक्रम मुस्कराए। ''यही तो सबसे मजेदार सीन है। इंटरनेट की दुनिया में कॉकरोच जनता पार्टी नामक एक डिजिटल पार्टी का उदय हुआ है। और पूरा विपक्ष इस पार्टी के नाम का मांग में सिंदूर लगाकर झूम उठा मानो इंस्टाग्राम ने सीधे प्रधानमंत्री बनने का ओटीपी भेज दिया हो।"

बेताल ठहाका लगाकार बोला- '' राजन! क्या सच में राजनेताओं को कॉकरोचों में देश का भविष्य दिखाई देने लगा लगा है?"

विक्रम मुस्कराते हुए बोले- ''तू कल्पना कर- एक आलीशान कमरा है। विपक्ष के नेता सोफे पर पसरे हैं। उनकी आंखों के सामने स्क्रीन पर कॉकरोज जनता पार्टी के नम्बर लगातार बदल रहे हैं। '10 लाख फॉलोअर्स। '20 लाख फॉलोअर्स।' '50 लाख फॉलोअर्स' '1 करोड़।' '2 करोड़।' और विपक्षी राजनेताओं के आँखों में वैसी ही चमक उभरती है जो मैकबेथ की आँखों में सिंहासन की भविष्यवाणी सुनकर उभरी थी।"

बेताल फिर से बोला- ''बताओ! वह कौन सी भविष्यवाणी थी?"

विक्रम बोले- ''विलियम शेक्सपियर ने अपने दुःखांत नाटक Macbeth में लिखा था, 'Stars, hide your fires, Let not light see my black and deep desires.' अर्थात- हे तारों! अपनी आग (चमक) को छुपा लो। प्रकाश को मेरी काली करतूतों और गहरी इच्छाओं को देखने मत दो।"

आज कुछ राजनेताओं के मन में शायद ऐसा ही कुछ चल रहा होगा-

''हे कॉकरोचों! अब तो ऐसा चमत्कार हो जाए कि डिजिटल कॉकरोच सत्ता बदलाव का डिजिटल प्रतीक बन जाए"

बेताल पेट पकड़कर हँसने लगा। "राजन! क्या अब क्रांति कॉकरोच करेंगे?"

विक्रम गंभीर हो गए। "नहीं बेताल। यही तो इस पूरे प्रकरण का सबसे बड़ा व्यंग्य है। विपक्ष ने उस डिजिटल कॉकरोच में वह ऊर्जा खोजनी शुरू कर दी, जो उसे अपने नेतृत्व में नहीं मिल रही।"

बेताल ने पूछा- "लेकिन इतने वर्षों से विपक्षी नेता यात्राएँ कर रहे हैं, भाषण दे रहे

हैं, गठबंधन बना रहे हैं, फिर जनता एक व्यंग्यात्मक कॉकरोच की ओर क्यों आकर्षित हुई?"

विक्रम बोले- "क्योंकि जनता कभी-कभी व्यंग्य में वह ईमानदारी देख लेती है, जो गंभीर राजनीति में गायब हो जाती है।

राहुल गांधी वर्षों से यात्राएँ कर रहे हैं। अखिलेश यादव लगातार भाजपा विरोधी राजनीति कर रहे हैं।

क्षेत्रीय दल अपनी-अपनी वैचारिक दुकानें सजाए बैठे हैं, लेकिन जनता के एक हिस्से ने अचानक एक काल्पनिक 'कॉकरोच पार्टी' को उनसे अधिक जीवंत, अधिक मनोरंजक और शायद अधिक ईमानदार व्यंग्य के रूप में स्वीकार कर लिया।"

बेताल बोला- "तो क्या विपक्ष की सबसे बड़ी समस्या भाजपा नहीं, उसकी अपनी कमजोरी है?"

विक्रम मुस्कुराए। "शेक्सपियर ने Julius Caesar में लिखा था- The fault, dear Brutus, is not in our stars, But in ourselves"

अर्थात समस्या सितारों में नहीं, हमारी अपनी कमजोरियों में है। विपक्ष लगातार भाजपा की ताकत पर चर्चा करता है, लेकिन अपनी कमज़ोरियों पर नहीं।

हर चुनावी हार का दोष EVM, मीडिया, एजेंसियों और नैरेटिव पर डाल देता है, लेकिन जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता क्यों घट रही है, इस पर आत्ममंथन नहीं करता।"

बेताल बोला - "तो कॉकरोच पार्टी वास्तव में विपक्ष का आईना बन गई?"

बिक्रम बोले- "बिल्कुल। यदि जनता को वास्तविक विकल्प मिल गया होता, तो क्या वह तिलचट्टे में लोकतांत्रिक आशा खोजती?"

कुछ देर हवा शांत रही। फिर बेताल बोला- "लेकिन सोशल मीडिया देखकर तो ऐसा लगता है मानो कल सुबह ही सत्ता बदल जाएगी!"

विक्रम हँसे। "शेक्सपियर ने Much Ado About Nothing में शोर, भ्रम और अतिनाटकीयता का मज़ाक उड़ाया था। आज भी वही हो रहा है। टीवी स्टूडियो में बहसें...

यूट्यूब पर 'नई क्रांति' के थंबनेल...

ट्विटर पर 'सिस्टम हिल गया' की घोषणाएँ... ऐसा माहौल बना दिया गया मानो कल संसद भवन पर कॉकरोच झंडा फहरा दिया जाएगा।"

बेताल फिर हँसा। "और विपक्ष?"

विक्रम बोले - "विपक्ष उस ट्रेंड को ऐसे देख रहा है जैसे रेगिस्तान में भटका यात्री मृगतृष्णा को नदी समझ ले।"

बेताल बोला - "लेकिन युवा तो कॉकरोच पार्टी को फॉलो कर रहा है!"

विक्रम ने उत्तर दिया- "यही अंतर विपक्ष नहीं समझ पा रहा। भारतीय युवा डिजिटल है, लेकिन दिशाहीन नहीं। वह व्यंग्य देखता है, पर राष्ट्र को व्यंग्य नहीं बनाना चाहता।

वह सरकार से प्रश्न करता है, लेकिन अराजकता भी नहीं चाहता। वह बेरोजगारी पर नाराज हो सकता है, लेकिन देश को अस्थिर प्रयोगशाला बनते हुए नहीं देखना चाहता।"

बेताल बोला- "तो क्या युवा वास्तव में कॉकरोच के साथ नहीं है?"

विक्रम बोले - "युवा कॉकरोच को फॉलो कर सकता है... मीम शेयर कर सकता है...

व्यंग्य कर सकता है... लेकिन मतदान केंद्र में जाकर वह 'फॉलो' और 'वोट' का अंतर समझता है।"

बेताल ने पूछा- "कैसे?"

विक्रम बोले- "शेक्सपियर का Hamlet आज के विपक्ष का सबसे सटीक रूपक है।

Hamlet लगातार सोचता है, बोलता है, संदेह करता है... लेकिन निर्णायक कर्म नहीं कर पाता।

उसकी प्रसिद्ध पंक्ति थी- 'To be,or not to be, that is the question.'

आज विपक्ष उसे शायद यूँ बोलता- 'To tweet, or not to tweet, that is the question-'

सरकार कुछ करे - ट्वीट। विदेश नीति - ट्वीट। चुनावी हार - ट्वीट। वायरल मीम - प्रेस कॉन्फ्रेंस। लेकिन राष्ट्रीय वैकल्पिक दृष्टि? वहाँ मौन।"

बेताल ने लंबी सांस ली। "तो क्या विपक्ष केवल डिजिटल सपनों में जी रहा है?"

विक्रम बोले - "शेक्सपियर ने The Tempest में लिखा था-'

'We are such stuff as dreams are made on कुछ विपक्षी दल आज भी उसी डिजिटल स्वप्न में जी रहे हैं कि कोई वायरल आंदोलन अचानक राजनीतिक भूचाल बन जाएगा।

लेकिन भारत की जनता अब केवल नारों से प्रभावित नहीं होती। उसे नेतृत्व चाहिए, दिशा चाहिए, स्थिरता चाहिए और सबसे बढ़कर विश्वास चाहिए।

अब श्मशान निकट आ चुका था। हवा और भारी हो गई थी। बेताल कुछ देर शांत रहा। फिर धीरे-धीरे बोला-"राजन! अब समझ आया।

कॉकरोच पार्टी वास्तव में भाजपा की ताकत से अधिक विपक्ष की कमजोरी का व्यंग्य है। विपक्ष उसे क्रांति समझ रहा है। लेकिन युवा उसे केवल व्यंग्य की भाषा में अपनी नाराज़गी व्यक्त करने का माध्यम बना रहा है।"

विक्रम मुस्कुराए। "हाँ बेताल। और यही भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी परिपक्वता है। सोशल मीडिया पर क्रांति चलती रहती है। स्टूडियो में बहसें होती रहती हैं। विपक्ष तालियाँ बजाता रहता है।

कॉकरोच ट्रेंड करता रहता है। लेकिन अंततः भारत का युवा जब ईवीएम के सामने खड़ा होता है, तब उसे याद रहता है कि राष्ट्र इंस्टाग्राम की स्टोरी से नहीं, स्थिर नेतृत्व और निर्णय से चलता है।"

इतना सुनते ही बेताल जोर से हँसा- "राजन! नाटक चलता रहेगा। कॉकरोच ट्रेंड करता रहेगा, लेकिन भारत का मतदाता अब भी कहानी का सबसे बुद्धिमान पात्र है!"

और इतना कहकर बेताल फिर उड़कर पेड़ पर जा लटका, जबकि विक्रम एक बार फिर उसे उतारने आगे बढ़ गए।

-रघुनाथ सिंह ■

दहेज की आग में जलती बेटियां आखिर कब बदलेगा समाज?

छाया सिंह
लेखिका

हिंदू धर्म में बेटियों को 'लक्ष्मी' का रूप मानते हैं। नवरात्रि में उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं, कन्या पूजन करते हैं और शादी में कन्यादान करते ही अपने दिल के टुकड़े को दूसरे के परिवार को सौंप देते हैं। लेकिन इसी समाज का एक घिनौना और कड़वा सच यह भी है कि, जब यही 'लक्ष्मी' किसी के घर की बहू बनती है तो वह कुछ दिन में दहेज के एक सामान में बदल दी जाती है। जिसकी कीमत कुछ रुपयों, गाड़ियों और सोने-चांदी से आंकी जाती है।

हाल ही में सामने आए ट्विशा शर्मा, पलक रजक और दीपिका नागर के मामले इस बात का जीता-जागता सबूत हैं। ये सिर्फ तीन नाम नहीं हैं, बल्कि यह हमारे खोखले होते जा रहे समाज की उस मानसिकता का आईना हैं जहां किसी के बेटे का घर बसाने के लिए दूसरे की बेटी को तो ले आया जाता है, लेकिन फिर दहेज के लालच में उसकी जान ले ली जाती है।

आखिर कब तक बेटियां इस लालच की आग में जलती रहेंगी? आखिर कब तक न्याय की आस में सड़कें मोमबत्तियों से रोशन होती रहेंगी और अदालतें तारीखों के बोझ तले दबी रहेंगी? लालच की बलि चढ़ती ये मासूम जिंदगियां और आज का पढ़ा-लिखा समाज जो चांद पर पहुंचने और डिजिटल इंडिया की बातें करता है, वो शादी जैसे पवित्र रिश्ते को लेकर सदियों पीछे चला जाता है।

ट्विशा, पलक और दीपिका के साथ जो हुआ वह कोई नई घटना नहीं है। किसी को दहेज के कम होने के ताने दिए गए, तो किसी पर उसकी सास ने झूठे और बेबुनियाद आरोप लगाकर उसका जीना मुहाल कर दिया। सोचने वाली बात यह है,

जो परिवार अपने बेटे की शादी कर बड़ी धूमधाम से अपने घर बहू लाता है, वह विदाई के अगले ही दिन से उस पर अपनी मनमानियां क्यों थोपने लगता है? क्या शादी का मतलब एक लड़की को जिंदगी भर के लिए प्रताड़ित करने का लाइसेंस मिल जाना है?

लड़के के घरवाले बड़े गर्व से कहते हैं कि, हमें कुछ नहीं चाहिए बस लड़की संस्कारों से जुड़ी होनी चाहिए। लेकिन घर आते ही फरमाइशों की एक लंबी लिस्ट तैयार हो जाती है। जब वो लिस्ट पूरी नहीं होती तो शुरू होता है मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना का वो दौर जो अक्सर एक बेटी की मौत के साथ ही खत्म होता है। न जाने देश में रोजाना कितनी बेटियां इस दहेज रूपी दानव के चक्कर में मौत के घाट उतार दी जाती हैं, जिनकी चीखें चारदीवारी के बाहर तक नहीं आ पातीं।

न्याय का अंतहीन चक्रव्यूह और समाज की बेरुखी हमारे देश की कानून व्यवस्था और सामाजिक रवैये पर भी आज एक बड़ा सवाल खड़ा करती हैं। जब किसी बेटी की जान चली जाती है, तब पुलिस थाने में FIR लिखवाई जाती है, पीड़ित परिवार थाने के चक्कर काटता है, समाज के कुछ संवेदनशील लोग और परिजन हाथों में मोमबत्तियां लेकर सड़कों पर निकलते हैं और 'जस्टिस' के नारे लगाते हैं और कुछ दिन में सब कुछ सामान्य हो जाने के बाद अखबार की सुर्खियां भी बदल जाती हैं, लोग सब भूलकर अपनी जिंदगी में मसरूफ हो जाते हैं। और फिर किसी और शहर में, किसी और घर में एक और ट्विशा, एक और पलक या एक और दीपिका इस क्रूरता का शिकार बनती है।

दोबारा से वही मोमबत्तियां, वही रोना-धोना और वही अंतहीन इंतजार शुरू हो जाता है। आखिर कब तक? क्या हमारा कानून इतना लाचार है कि वह इन दरिंदों के मन में खौफ पैदा नहीं कर सकता? क्या हमारी न्याय प्रणाली इतनी धीमी है कि न्याय मिलते-मिलते माता-पिता की आंखें ही पथरा जाती हैं?

'पराया धन' से 'गर्व का प्रतीक' बनने तक का सफर गलती सिर्फ लड़के वालों की या कानून की नहीं है, कहीं न कहीं हमारी सामाजिक परवरिश में भी खोट है।

हाल ही में सामने आए ट्विशा शर्मा, पलक रजक और दीपिका नागर के मामले इस बात का जीता-जागता सबूत हैं। ये सिर्फ तीन नाम नहीं हैं, बल्कि यह हमारे खोखले होते जा रहे समाज की उस मानसिकता का आईना हैं जहां किसी के बेटे का घर बसाने के लिए दूसरे की बेटी को तो ले आया जाता है, लेकिन फिर दहेज के लालच में उसकी जान ले ली जाती है।

बचपन से ही बेटी को सिखाया जाता है, 'तुम पराए घर की अमानत हो, शादी के बाद ससुराल ही तुम्हारा असली घर है, वहां से सिर्फ तुम्हारी अर्थी ही निकलनी चाहिए।'

हमें लोगों की इस सोच को उखाड़ फेंकना होगा। क्यों निकले सिर्फ अर्थी? क्यों न एक बेटी सम्मान के साथ अपने मायके लौट आए। अगर उसका ससुराल उसके जीने का हक छीन रहा हो?

माता-पिता को अपनी बेटियों को केवल बर्दाश्त करना नहीं, बल्कि विरोध करना सिखाना होगा। हमें अपनी बेटियों को इतना कमजोर नहीं बनाना है कि वे बंद कमरों में आंसू बहाएं और अंत में घुट-घुट कर मर जाएं। अब चुप रहने का वक्त नहीं है, बल्कि बेटियों को निडर बनाने का वक्त है। आज के इस दौर में हर माता-पिता को अपनी बेटियों के लिए कुछ कड़े कदम उठाने होंगे।

पढ़ाई और आत्मनिर्भरता : बेटी की शादी के लिए पैसे जोड़ने से पहले उसकी शिक्षा और उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में पैसा लगाएं। एक आत्मनिर्भर लड़की कभी भी किसी के अत्याचार को सहने के लिए मजबूर नहीं होगी।

बेटियों को उनके हक के लिए लड़ना सिखाएं : बेटियों को बचपन से ही निडर बनाओ, उन्हें सिखाओ कि चुप रहना संस्कार नहीं, बल्कि अपराध को बढ़ावा देना है। अगर ससुराल में गलत हो रहा है, तो आवाज पहली बार में ही उठनी चाहिए। हर बेटी को यह विश्वास होना चाहिए कि चाहे कुछ भी हो जाए, उसके माता-पिता का घर उसके लिए हमेशा खुला है। उसे यह डर नहीं होना चाहिए कि अगर मैं वापस आ गई तो समाज क्या कहेगा? 'समाज तमाशा देखने के अलावा कुछ नहीं करता।'

दहेज लोभियों का सामाजिक बहिष्कार : जिस परिवार में दहेज की मांग की जाए, वहां शादी करने से साफ इनकार कर दें। ऐसे लोगों को समाज में सिर उठाकर जीने का हक नहीं होना चाहिए।

आइए, हम आज ही यह संकल्प लें कि हम अपने घर की बेटियों को इतना मजबूत, इतना साहसी और इतना निडर बनाएंगे कि, कोई भी दहेज का लोभी उनकी जिंदगी से खेलने की हिम्मत न कर सके। अब मोमबत्तियां जलाने का नहीं, बल्कि समाज के इस अंधकार को मिटाने के लिए मशाल बनने का वक्त है। ■

सादगी, समर्पण, प्रकृति के प्रति कृतज्ञ जून के पर्व

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

जून की भीषण गर्मी में हमारे उत्सव हमें यात्रा, संगीत, स्वास्थ्य और पर्यावरण का महत्व समझाते हुए हमसे मानसून का स्वागत भी करवाते हैं। जगह-जगह आम महोत्सव मनाने की शुरूआत हो जाती है। जून के पहले सप्ताह में शिमला समर फैस्टिवल मनाया जाता है। इस प्रसिद्ध त्यौहार में खेलकूद की गतिविधियां, फैशनेबल कपड़ों, हैंडिक्राफ्ट वस्तुओं और व्यंजनों, फूलों की, कुत्तों की प्रदर्शनी लगती है। हवा में कलाबाजियां और लाइव फैशन शो का प्रदर्शन होता है। 19 साल बाद दुर्लभ संयोग के कारण, इस वर्ष मई-जून में कुल 8 बड़े मंगल पड़ रहे हैं। बुढ़वा मंगल (या बड़ा मंगल) के कुल चार महत्वपूर्ण त्यौहार हैं, जो ज्येष्ठ माह के अंतर्गत आते हैं। मई में मना चुके हैं और इस माह के 2, 9, 16 और 23 जून हैं। बुढ़वा मंगल को संकटमोचन हनुमान जी तथा बालाजी मंदिर में सुन्दरकांड, हनुमान चालीसा का पाठ कर, चोला चढ़ाया जाता है। हनुमान भक्त जगह जगह भंडारे, लस्सी, ठंडाई एवं प्याऊ की व्यवस्था करते हैं।

परमा एकादशी 11 जून, को मनाई जाएगी, यह एकादशी अधिकमास (पुरुषोत्तम मास) के कृष्ण पक्ष में आती है और 3 साल में एक बार पड़ती है। यह विशेष व्रत भगवान विष्णु को समर्पित है, जिसमें पूजा और उपवास से अपार पुण्य प्राप्त होता है।

ओडिशा में राजा संक्रांति समारोह मानसून के शुरुआत का तीन दिवसीय (14 से 16 जून) उत्सव है। इसे 'स्विंग फेस्टिवल' भी कहते हैं, जगह-जगह पेड़ों पर झूले जो पड़ जाते हैं। पृथ्वी पर नंगे पांव भी नहीं चलते क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मानसून की बारिश से पहले पृथ्वी को आराम दिया जाना चाहिए। महिलाएं घर के काम से छुट्टी लेतीं हैं और किसान खेती से। दूसरे दिन को 'सजबजा' कहते हैं। इसमें सिलबट्टे को सजा कर रखते हैं। हिंदू, देवी धरती के प्रतीक सिल को हल्दी का लेप लगा कर महिलाओं द्वारा स्नान कराया जाता है। धरती मां को फलों का भोग लगाया जाता है। बारिश का स्वागत करने के लिए सब एक साथ आते हैं। समापन 16 जून को इस विश्वास से कि धरती मां के आशीर्वाद स्वरुप अच्छी पैदावार होगी।

ओचिरा कलि मंदिर से जुड़ा केरल का एक वार्षिक उत्सव है। जो पुराने समय में हुई एक लड़ाई की याद में लोग मनाते हैं। जिसमें दो समूह कायाकुलम और अलाप्पुझा के बीच लड़ाई हुई थी। मलयालम में कलि का अर्थ खेल होता है। ओचिरा कलि में पुरुष और लड़के पानी से भरे धान के खेत में नकली लड़ाई करते हैं। संगीतमय यह लड़ाई प्रतिभागियों के शारीरिक कौशल का प्रदर्शन है। 15, 16 जून को इसका आनन्द उठाने के लिए पर्यटक पहुंचते हैं। यहां की अनोखी रस्म है 'बैलों की पूजा' क्योंकि शिव का वाहन नंदी बैल है।

जनिता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता, पंचैते पितरः स्मृताः॥

फादर डे मनाने से पहले भी हमारे पुराण में इन पांच को पिता के लिए कहा जाता था जन्मदाता, उपनयन करने वाला, विद्या देने वाला, अन्नदाता और भयत्राता।

न तो धर्मचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया॥

पिता की सेवा अथवा उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर कोई धर्माचरण नहीं है। -वाल्मीकि रामायण

सिख समुदाय में गुरु परंपरा के पांचवें गुरु अर्जुन देव का शहीदी दिवस 18 जून को उनकी शहादत को याद करने के लिए मनाते हैं। गुरु अर्जुन देव जी सिख धर्म के पहले शहीद हैं। इन्होंने धर्म के लिए अपनी शहादत दी। इनके शहीदी दिवस पर जगह-जगह ठंडे शर्बत की छबीलें लगाई जाती हैं। गुरु जी ने सिखों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा धार्मिक और सामाजिक कार्यों में लगाने के लिए प्रेरित किया।

भारत द्वारा प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय योग

दिवस का रिकॉर्ड 175 सदस्य देशों द्वारा इसका समर्थन किया गया। संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव पर 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रुप में घोषित किया गया। इसका उद्देश्य योगाभ्यास करने के लाभ के बारे में विश्व की जागरुकता बढ़ाना है। योग और संगीत दोनों तनाव दूर करते हैं। हमारे मन को शांत रखते हैं। कहते हैं संगीत हर मर्ज की दवा है। मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए म्यूजिक थैरेपी बहुत कारगार है। संगीत की विभिन्न खूबियों की वजह से विश्व में एक दिन संगीत के नाम है। 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय संगीत दिवस भी मनाया जाता है।

हर वर्ष जून पूर्णिमा के दिन जम्मू और कश्मीर के लेह में सिंधु दर्शन महोत्सव का 22 ये 27 जून तक आयोजन किया है। जिसमें बड़ी संख्या में विदेशी और घरेलू पर्यटक आते हैं। सिंधु दर्शन समारोह के आयोजन का मुख्य कारण सिंधु नदी को भारत के सांप्रदायिक सद्भाव और एकता के प्रतीक के रुप में समर्थन करना है। सिंधु दर्शन लेह के मुख्य शहर से 8 किमी. दूर स्थित शीला मनला में मनाया जाता है।

दस दिवसीय गंगा दशहरा का पर्व हर साल ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि 22 जून को मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन राजा भागीरथ के कठोर तपस्या के चलते मां गंगा का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। दशहरा का अर्थ 10 मनोविकारों के विनाश से है। क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी है। हिंदू धर्म में गंगा दशहरा पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता हैं। इस दिन गंगा जी में स्नान करना अपना सौभाग्य समझा जाता हैं। जहां पर जो भी नदी होती है, श्रद्धालू उसकी पूजा अर्चना कर लेते हैं क्योंकि नदियां हमारी संस्कृति की पोषक हैं।

गोवा में साओ जोआओ 24 जून को मानसून आगमन के साथ ही खास तौर पर मछुआरा समूह द्वारा मनाया जाता है। नाच गाना और तरह-तरह के रंगारंग कार्यक्रमों द्वारा आपस में मनोरंजन करते हैं। ये उत्सव यहां का खास आकर्षण है।

सिख समुदाय में गुरु परंपरा के पांचवें गुरु अर्जुन देव का शहीदी दिवस 18 जून को उनकी शहादत को याद करने के लिए मनाते हैं। गुरु अर्जुन देव जी सिख धर्म के पहले शहीद हैं। इन्होंने धर्म के लिए अपनी शहादत दी। इनके शहीदी दिवस पर जगह-जगह ठंडे शर्बत की छबीलें लगाई जाती हैं। गुरु जी ने सिखों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा धार्मिक और सामाजिक कार्यों में लगाने के लिए प्रेरित किया।

हिंदू धर्म में 24 एकादशियों का बहुत महत्व है। ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी 25 जून को निर्जला एकादशी कहते हैं। इसकी कथा में हिंदू धर्म की बहुत बड़ी विशेषता है कि वह सबको धारण ही नहीं करता है, सबके योग्य नियमों की लचीली व्यवस्था भी करता है। महर्षि वेदव्यास ने पाडंवों को एकादशी व्रत का संकल्प कराया तो भीम ने कहा, "पितामह इसमें प्रति पक्ष एक दिन के उपवास की बात कही है। पर मैं तो एक समय भी भोजन के बगैर नहीं रह सकता। मेरे पेट में 'वृक' नाम की जो अग्नि है उसे शांत रखने के लिए मुझे कई लोगों के बराबर और कई बार भोजन करना पड़ता है। क्या अपनी उस भूख के कारण मैं एकादशी जैसे पुण्य व्रत से वंचित रह जाऊंगा?" यह सुनते ही महर्षि ने भीम का मनोबल बढ़ाते हुए कहा, "आप ज्येष्ठ मास की निर्जला नाम की एकादशी का व्रत करो। तुम्हें वर्ष भर की एकादशियों का फल मिलेगा।"

पनिहाटी में प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल की त्रयोदशी 27 जून को दही चूड़ा का विशेष भोज होता है। इस 500 साल से चलने वाले 'दंड महोत्सव' का विशेष विधान है। जो 'दही चूड़ा महोत्सव' कहलाता है। पश्चिम बंगाल में कलकत्ता से 10 किमी. दूर पनिहाटी गांव गंगा तट पर है। सोलहवीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु संर्कीतन का यह प्रमुख केन्द्र बन गया। प्रभु भक्त रघुनाथ दास, प्रभु नित्यानंद के दर्शनों के लिए पानीहाटी गए। जहां प्रभु गंगा के तट पर बरगद के नीचे अपने शिष्यों से घिरे बैठे थे। रघुनाथ झिझक के मारे पेड़ के पीछे छिप कर उनके दर्शन कर रहे थे। प्रभु नित्यानंद ने उन्हें देख कर कहा, "रघुनाथ दास! तुम चोर की तरह छिपे हो! और मैंने तुम्हें पकड़ लिया। यहां आओ मैं तुम्हें दण्ड दूंगा।" और दण्ड स्वरूप बड़ा उत्सव कर, भक्तों को दहीं चावल परोसने का आदेश दिया। अब चिलचिलाती गर्मी में सेठ ने बड़ी खुशी से उसमें फल मेवे मिलाकर लाजवाब प्रसाद बनाया। इस अद्भुत दण्ड की याद में यह उत्सव मनाया जाता है।

15वीं शताब्दी के प्रसिद्ध समाज सुधारक, कवि, संत का जन्म ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा 28 जून को हुआ था। जिसे कबीर प्रकाश दिवस के रुप में मनाया जाता है। कबीर अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के प्रथम विद्रोही संत हैं। जगह-जगह होने वाले कार्यक्रमों में इनके दोहे गाए जाते हैं।

हमारे देश में साल का छठा महीना जून सबसे गर्म होता है। भारत में मेलों, उत्सवों और महापुरुषों के कारण जून बहुत मुख्य है। इन सभी उत्सवों, व्रत और विशेष दिनों को मनाते हुए, हमें प्रयास करना चाहिए कि हम सामाजिक चेतना भी आए। ■

गोबर गैस का गाँव थरौली

मध्य एशिया में छिड़े युद्ध के बाद उपजे तेल और गैस संकट के बीच उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के गांव थरौली की एक ऐसी कहानी सामने आई है जो देश के और गाँवों के लिए भी प्रेरक है। इस गाँव के लगभग 50 प्रतिशत परिवार बायोगैस प्लांट के माध्यम से गैस का उत्पादन कर साल भर खाना बनाते हैं। इस गांव में पिछले 10 साल से गोबर गैस प्लांट लगातार लगाएं जा रहे हैं। आज गाँव के 50 प्रतिशत परिवार एलपीजी से मुक्त हो चुके हैं। गोबर गैस प्लांट को लगवाने के लिए मात्र ₹6000 का खर्चा आ रहा है। इसमें लगभग 7 से 8 घंटे में गोबर गैस बनाकर तैयार हो जाती है और घर के जितने भी मेंबर हैं सभी का खाना आसानी से बन जाता है। छोटे से गांव थरौली के लोगों का सामुदायिक प्रयास के द्वारा ईंधन के क्षेत्र में गाँव को आत्मनिर्भर बनाने का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

500 रुपये प्रति माह से करोड़ों तक का सफर

यह कहानी है ग्रेटर नोएडा के अजय कुमार राणा की जो एक समय मात्र ₹500 प्रति माह के वेतन पर नौकरी किया करते थे। अपने करियर की शुरुआत में वे एक इलेक्ट्रिक सुपरवाइजर थे। अपने कौशल के दम पर प्रगति करते करते उनका वेतन ₹60,000 प्रति महीने तक पहुंच गया। उन्हें महसूस हुआ कि नौकरी उनकी मंजिल नहीं है। उन्होंने एक अच्छी खासी नौकरी छोड़कर अनिश्चितता की राह चुनी और अपने PF फंड से करीब ₹2 लाख निकालकर इलेक्ट्रिकल कंट्रोल पैनल्स बनाने का काम शुरू किया।

समय के साथ उनका बिजनेस तेजी से बढ़ने लगा। आज वे चीन जैसे बड़े बाजार में भी अपने प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट कर रहे हैं। जहां कभी वे एक छोटी सी नौकरी करते थे, आज उनका सालाना टर्नओवर ₹50 करोड़ से भी अधिक हो चुका है। इसके साथ ही अनेक लोगों को रोजगार दिया जिससे उनका परिवार चलता है। स्वयं आत्मनिर्भर बनकर लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना ही उनके लिए सच्ची सफलता है।

हाउस ऑफ हिमालयाज : पहाड़ से पहचान तक

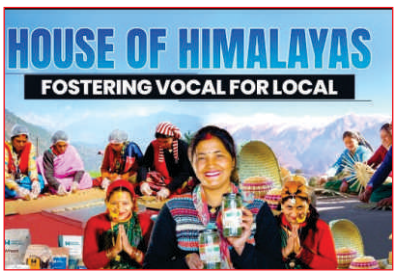

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' और 'लोकल टू ग्लोबल' के विचार को आगे बढाते हुए उत्तराखण्ड सरकार ने राज्य के शुद्ध, पारंपरिक और स्थानीय उत्पादों को देश और दुनिया में पहचान दिलाने के लिए 'हाउस ऑफ हिमालयाज' पहल शुरू की। जिसके माध्यम से प्रदेश के स्थानीय कारीगरों, किसानों और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण को गति मिली है। आज अंब्रेला ब्रांड हाउस आफ हिमालयाज से 3,300 ग्रामीण महिलाओं को प्रत्यक्ष और 28,000 से ज्यादा महिलाओं को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ मिल रहा है।

अच्छी गुणवत्ता और आकर्षक पैकेजिंग के कारण इस ब्रांड ने देश के कई बड़े होटलों में अपनी जगह बनाई है। मसूरी, देहरादून, ऋषिकेश, नैनीताल, हरिद्वार, नई दिल्ली सहित जौलीग्रांट एयरपोर्ट और चारधाम यात्रा मार्गों पर भी इसके उत्पाद उपलब्ध हैं। इसके उत्पाद अमेरिका तक पहुंच चुके हैं। जल्द ही यूएई, मैक्सिको और कनाडा में भी ऑनलाइन उपलब्ध होंगे।

जौनसार में परंपरा और सामाजिक संतुलन की अनूठी पहल

जौनसार, उत्तराखंड : आज के दौर में जहां दिखावे और फिजूलखर्ची की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है, वहीं उत्तराखण्ड के जनजातीय क्षेत्र जौनसार बावर ने समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है यहां के ग्रामीणों ने सामाजिक समानता, आर्थिक संतुलन और अनावश्यक खर्च पर रोक लगाने के उद्देश्य से सोने के गहनों के सीमित उपयोग का निर्णय लेकर एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है और खास बात यह है कि यह पहल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हालिया अपील से भी पहले शुरू हो चुकी थी।

16 अक्टूबर 2025 को चकराता तहसील के कंघाड़ गांव में तीन गांवों के लोगों की बैठक हुई, जिसमें महिलाओं द्वारा सीमित आभूषण पहनने का निर्णय लिया गया इसके बाद जौनसार बावर के कई और गांवों में यह पहल तेजी से बढ़ने लगी है और अब कई गांवों में महिलाएं केवल कान, नाक और गले में ही सोने के गहने पहने दिखाई देती हैं।

ग्रामीणों का मानना है कि आर्थिक रूप से कमजोर परिवार अक्सर समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए कर्ज लेकर महंगे गहने बनवाते हैं, जिससे उन पर आर्थिक बोझ बढ़ता है, वहीं जो महिलाएं अधिक गहने नहीं पहन पातीं, उनमें हीनभावना पैदा होती है इसी सामाजिक असंतुलन को समाप्त करने के लिए यह निर्णय लिया गया।

केवल आभूषण ही नहीं, बल्कि शादी-विवाह में भी सादगी अपनाने के फैसले किए गए हैं कई गांवों में विवाह समारोह में सिर्फ एक मीठा व्यंजन परोसने और पहली शादी में मिठाई का केवल एक डिब्बा देने जैसी परंपराएं लागू की गई हैं ग्रामीणों का कहना है कि यह पहल सामाजिक सौहार्द, आर्थिक बचत और समानता को मजबूत करेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में देशवासियों से एक वर्ष तक सोना न खरीदने और आर्थिक संसाधनों का समझदारी से उपयोग करने की अपील की थी।

एवरेस्ट पर आईटीबीपी की बेटियों का तिरंगा, भारत ने रचा इतिहास

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल ITBP की पहली महिला टीम ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराकर इतिहास रच दिया हैं, 14 सदस्यीय दल में शामिल 11 महिला पर्वतारोहियों ने कठिन मौसम, अहक्सीजन की कमी और डेथ जोन जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए 21 मई 2026 को एवरेस्ट फतह की और यह केवल एक पर्वतारोहण अभियान नहीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति के साहस, आत्मविश्वास और संकल्प की मिसाल है।

नेपाल की ओर से साउथ कोल रूट के जरिए चढ़ाई करते हुए टीम की पहली सदस्य रात 12.52 बजे शिखर पर पहुंची, जिसके बाद सभी महिला पर्वतारोही सफलता पूर्वक एवरेस्ट की चोटी तक पहुंचीं, आईटीबीपी ने इस उपलब्धि को देश के लिए गर्व का क्षण बताया है।

19 अप्रैल को शुरू हुआ यह अभियान हर भारतीय के लिए प्रेरणा बन गया है। इन देश भक्त महिलाओं ने साबित कर दिया कि

हौसले बुलंद हों तो दुनिया की कोई ऊंचाई असंभव नहीं होती और उनकी इस सफलता ने देश की हर बेटी को अपने सपनों की उड़ान भरने का संदेश दिया है

T.T. bazaar

ttbazaar.com

Shop Now:

Follow us on

https://ttbazaar.com/

*Quality manufacturers can upload their products for selling through **ttbazaar** Marketplace.*

Contact: Mukesh Bhardwaj, M.: +91 98964 39343 | E-mail: mbhardwaj@ttbazaar.com

Visit us: **www..ttlimited.co.in / www.ttbazaar.com**

स्वदेशी ब्रांड ही बेचें - स्वदेशी ब्रांड ही अपनाएँ!

Declared as "Well Known" Brand by Bharat Sarkar.
(Only 334 Well-Known Trademarks in India out of 30 lakh+)

Shop Online:
www.ttbazaar.com

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष: 0120–4545608
ई–मेल: ssm.noida@gmail.com
वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

- भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
- नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
- आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
- प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
- सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
- विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

प्रदीप भारद्वाज	राजीव नाईक	जितेन्द्र गौतम	देवेन्द्र शर्मा
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)